R.N.I. NO. : MPHIN/2008/24212

Postal Reg.MP/ICD/1253/2024-2026
प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2024 पोस्टिंग दिनांक 10 फरवरी 2024

औदुंबर कलश

पूजा

वर्ष - 16 अंक - 7

फरवरी 2024

वार्षिक मूल्य 2 रुपये

आदीप्त आभा कांति तस,
सहस्त्र सूर्यरश्मि नमनं।
हे आप्त सर्वसंताप चित्त,
तव दरश मात्र विलोपनं।।

श्री आभ्यंतर औदुम्बर केलवणी मंडल वडोदरा एवं
श्री मा.आ.औ.ब्राह्मण मंडल इंदौर, 87 नेताजी सुभाष मार्ग, इंदौर (म.प्र.)

केलवणी मंडल परिचय

व्यवस्थापक सभ्यश्री

सत्यकाम एस. शास्त्री
उपप्रमुख इंदौर

डॉ. कल्पेश कुमार एस.रणा
सह. मंत्री दाहोद

शिशिरकुमार के. आचार्य
कार्य. सहमंत्री अहमदाबाद

गोविंदभाई सी. पंड्या
कोषाध्यक्ष बड़ौदा

कारोबारी सभ्यश्री

पंकजकुमार जी. व्यास
अहमदाबाद

बंकिमभाई एल. व्यास
अहमदाबाद

रीटाबेन आर. पंड्या
बड़ौदा

अंकित भाई वी. रणा
दाहोद

कीर्तिकान्तभाई जे. शास्त्री
दाहोद

दक्षेश भाई ए. रणा
दाहोद

अरुण भाई वी. व्यास
गोधरा

अविनाश भाई पी. शास्त्री
इंदौर

मनोज कुमार आर. रणा
इंदौर

जितेन्द्र कुमार जी. पंड्या
मुंबई

प्रगनेश कुमार एस. आचार्य
मुंबई

राकेशभाई आर. भट्ट
जयपुर

संपादकीय मंडल

अखिलेश शास्त्री
प्रधान संपादक, इंदौर

देवदत्त पंड्या
प्रबंध संपादक, अहमदाबाद

संदीप भट्ट
संपादक, अहमदाबाद

नैषध पुराणी
संवाददाता, अहमदाबाद

गोविंद पंड्या
प्रबंध संपादक, बड़ौदा

हिरेन जोशी
संपादक, बड़ौदा

कौशल पुराणी
संपादक, बड़ौदा

मुकेश रणा
संवाददाता, बांसवाड़ा

सुरेश रणा
संपादक, दाहोद

रणा हितेन्द्र अग्निहोत्री
संपादक, दाहोद

नलिनभाई शास्त्री
परामर्शदाता, दाहोद

अभिषेक शास्त्री
प्रबंध संपादक, दाहोद

अमित पंड्या
संवाददाता, दांता-अंबाजी

अरुण व्यास
प्रबंध संपादक, गोधरा

तुषार व्यास
संवाददाता, गोधरा

मनोज रणा
संपादक, इंदौर

दीपक पंड्या
प्रबंध संपादक, इंदौर

विशाल रणा
संवाददाता, इंदौर

राकेश भट्ट
परामर्शदाता, जयपुर

राहुल भट्ट
संवाददाता, जयपुर

राकेश रणा
संपादक, खरगोन

अभय रणा
संवाददाता, खरगोन

वृजेश व्यास
संपादक, मुंबई

नीलेश पंड्या
प्रबंध संपादक, मुंबई

केतन आचार्य
संवाददाता, मुंबई

विपुल रणा
संपादक, शामलाजी

मेहुल आचार्य
संवाददाता, यूएसए

कल्पेश रणा
प्रबंध संपादक, यूएसए

सामंत भट्ट
संपादक, उदयपुर

DIVYA JEWELLERS

JEWELLERY BEYOND PREISION

Prop.
Ayush Shastri

Deals in Gold wholsale Jewellery and Gold bullian

44, Bada Sarafa Jagdish Bhawan, INDORE Email - divyajewelersindore@gmail.com Mob. +91 94796-33333

स्व. श्री गोविंदलाल जवेरी "रसिक" इंदौर

પૂર્વજો જેટલું જ્ઞાન પોતાના જીવનમાં મેળવી શકતા તે પોતાના શિષ્યોને વારસામાં આપી જતા. બીજી સંપત્તિના વારસ તો પોતાના સંબંધી જન જ હોય પરંતુ જ્ઞાનના વારસ તો બધા જ અધિકારી શિષ્યો થતા. જ્ઞાનથી કેવળ થોડાક કુટુંબીજનોનો જ નહિ પણ સંપૂર્ણ વિશ્વનો અનંત કાળ સુધી ઉપકાર થાય છે તેથી પ્રાચીન ઋષિમુનિઓએ શિષ્યપરંપરાને પણ વંશજ ગણ્યો છે. મહાભાષ્યકાર પતંજલિ મુનિએ સ્પષ્ટ કહ્યું છે કે વંશ બે પ્રકારે હોય છે, એક જન્મથી અને બીજો વિદ્યાથી. શિષ્યો આગલા ઋષિઓના અને પોતાના ગુરૂના જ્ઞાનને પોતાના ગુરુ પાસેથી પ્રાપ્ત કરી તેમાં પોતાના અનુભવોથી પ્રાપ્ત થયેલા જ્ઞાનને ઉમેરી તે પોતાના શિષ્યોને આપતા. એવો ક્રમ ભારતવર્ષમાં ઘણા પ્રાચીન કાળથી ચાલ્યો આવે છે. આ પ્રણાલીમાં જ ઉપનયન–સંસ્કારની સાર્થકતા છે. ઉપનયન–સંસ્કારથી જ 'દ્વિજ' સંજ્ઞા મળી શકવાનો હેતુ પણ એજ લાગે છે.

पूर्वज जितना ज्ञान अपने जीवनकाल में अर्जित करते वह अपने शिष्यों को प्रदान कर देते है। अन्य संपत्ति के उत्तराधिकारी तो स्वयं के संबंधीजन होते हैं, परंतु ज्ञान के वारिस तो योग्य शिष्यगण ही होते हैं। ज्ञान से केवल थोड़े कुटुंबीजनों का नहीं अपितु संपूर्ण विश्व का अनंतकाल तक उपकार होता है, इस प्रकार प्राचीन ऋषि मुनियों ने शिष्य परंपरा को भी वंशज गिना है। महाभाष्यकार पतंजलि ऋषि में स्पष्टरुप से कहा है कि वंश दो प्रकार के होते है, एक जन्म से और दूसरा विद्या से। शिष्यगण ऋषियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान अपने गुरुओं के माध्यम से ग्रहण कर उसको अपने ज्ञान के माध्यम से अभिवृद्धि कर स्वयं के शिष्यों को देते। ऐसा क्रम भारतवर्ष में अर्वाचीनकाल से चलता आ रहा है इसी प्रणाली में उपनयन संस्कार की सार्थकता है। उपनयन संस्कार से 'द्विज' संज्ञा मिलने का तात्पर्य यही है ऐसा अनुभूत होता है।

गोविंदलाल जवेरी 'रसिक'
औदुम्बर अंक मई १९६० (पृष्ठ ५) से उद्धत

॥ श्रीः॥

श्रद्धावनत

अखिलेश शास्त्री सत्यकाम शास्त्री

ज्वेलर्स श्री गोविन्दलाल चन्द्रशेखर

88, छोटा सराफा, इन्दौर – 0731–2432009

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अखिलेश शास्त्री द्वारा आकृति ग्राफिक्स 17, आदर्श बिजासन नगर, सुभाष नगर चौराहा, इन्दौर से मुद्रित एवं 138, सुभाष मार्ग, श्री जगदीश चेम्बर्स, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित, प्रधान संपादक अखिलेश शास्त्री

हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता होठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर संचित विराग
आँखें देतीं सर्वस्व वार
जो तुम आ जाते एक बार

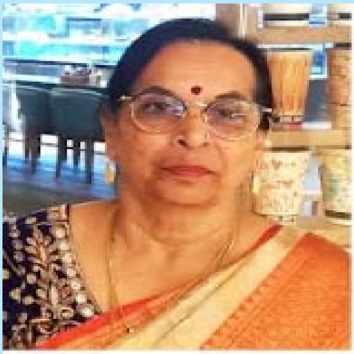

श्रद्धानवत

राकेश कुमार भट्ट, देवांशु, श्रीमती प्रियंका बेन, चि. शिव डॉ दिशा व्यास,
श्री दीपक व्यास, चि.रियंश, चि.सर्वम, श्री लोकेश कुमार भट्ट, श्रीमती मयूरी बेन

'औदुम्बर कलश पूजा' का प्रथमांक का विमोचन करते हुए राष्ट्रीय कवि गुरुवर श्री सत्यनारायण सत्तन

श्री आभ्यांतर औदुम्बर केलवणी मंडल वडोदरा में द्वारा आयोजित गरबा महोत्सव में महिला मंडल

माताजी की आरती करते हुए सभी समाजजन

मुंबई में आयोजित गरबे के दौरान एकत्रित महिला मंडल का चित्र

मुंबई में आयोजित सामुहिक श्रावणी उपाकर्म में भाग लेते हुए समस्त आभ्यांतर औदुम्बर ब्राह्मण समाज

इंदौर में आयोजित सामुहिक श्रावणी उपाकर्म में भाग लेते हुए समस्त आभ्यांतर औदुम्बर ब्राह्मण समाज

रामलला प्रतिष्ठा दिवस पर दाहोद आभ्यांतर औदुम्बर ब्राह्मण समाज में सामुहिक रुप से हनुमान चालीसा का पाठ किया

वडोदरा में आयोजित सामुहिक श्रावणी उपाकर्म में भाग लेते हुए समस्त आभ्यांतर औदुम्बर ब्राह्मण समाज

मा.आ.औ.ब्रा.मंडल इंदौर द्वारा को विद्यार्थी शैक्षणिक पुरुस्कार निमित्त हेतु श्रीमती मधुबेन राजीव जोशी द्वारा एक लाख रुपये की राशि प्रदान की इस हेतु मंडल द्वारा उनका स्वागत किया गया

Heartiest congratulations to Dr.pooja Vivek Bhatt for being awarded the post graduate degree in medicine at dated 19/1/2024 best wishes for the bright future ahead to serve all.

26 जनवरी को सत्र न्यायालय अहमदाबाद (ग्रामीण) में हमारे समाज के श्री नरेश दवे (न्यायाधीश) द्वारा सलामी लेकर झंडावंदन किया गया।

26 जनवरी के आयोजन में एमपीईबी इंदौर के डायरेक्टर अमित जी तोमर द्वारा उत्कृष्ट सेवाओं के लिए मनोज जी राणा को सम्मानित किया गया।

महाराजा अजमीढ़ जयंती के अवसर पर श्री मैढ़ क्षत्राणी महामंच द्वारा प्रधान संपादक अखिलेश शास्त्री का शाल श्रीफल से सम्मान किया गया।

अहमदाबाद में प्रसिद्ध कवि तुषारभाई शुक्ला, युवा साहित्यकार श्रीराम मोरी और रंगकर्मी श्री जनक रावल गुजरात समाचार के डायरेक्टर श्री अगम शाह की उपस्थिति में स्वजातीय बंधु युवा श्री नैषद पुराणिक की पुस्तक का लोकार्पण किया गया

महेश शिवशंकर भाई जोशी सागवाड़ा (हालोल) को ग्लोबल स्कालर फाउंडेशन द्वारा भूषण पुरुस्कार दिया गया। चित्र उसी अवसर का।

रात घने अंधियारे में
यादों का तूफां उठता है,
अश्रु धारा बहती है,
सांसो का चलना खलता है
मन की परतें खुल जाती है,
भावों में यूं घुल जाती है
बाहर सन्नाटा गहराता है,
अंदर सब शोर मचाता है
एक हंसता-सा चेहरा आकर,
आंखों में धुंधलाता है
कानों में गुंजित होता है,
बीते कल की याद दिलाता है
हर कदम-कदम जो साथ रहा,
सदा शीर्ष पर जिसका हाथ रहा
जीवन बंधन को तोड़ गया,
क्यूं आज अकेला छोड़ गया
शायद तप उनका पूर्ण हुआ,
ईश्वर में मिल संपूर्ण हुआ
जीवन दर्शन वो दिखा गया,
हंस कर सब सहना सीखा गया।

सादर शत्-शत् नमन्

॥ पुण्यस्मरण ॥

स्व.प्रकाशचंद जी राणा

अवतरण 01.08.1952

अवसान 27.12.2023

॥ श्रद्धावनत ॥

गं.भा. उर्मिला प्रकाशचंद राणा

कमल राणा - सौ. हरसिद्धि राणा

राकेश राणा - सौ. दर्शना राणा

हर्ष राणा (छोटू)

विचार पुष्प

		पृष्ठ
❒ तारतम्य	विचार पुष्प	1
❒ मंडल परिचय	-	2
❒ संपादकीय	- अखिलेश शास्त्री (इन्दौर)	3-4
❒ अध्यक्षीय	- सत्यकाम शास्त्री (इन्दौर)	5-7
❒ मंत्री की कलम से	- शिशिरकुमार आचार्य (अहमदाबाद)	8
❒ कलश वैचारिकी	- रणा हितेंद्र अग्निहोत्री (दाहोद)	9-14
❒ अहरहः संध्यामुपासीत	- नलिन भाई शास्त्री (दाहोद)	15-17
❒ माँ गायत्री का साक्षात्कार	- राकेश रणा (खरगोन)	18
❒ સાર્વભૌમિકમહાકવિકાલિદાસ	- अभिषेक उपाध्याय (सूरत)।	19-25
❒ रागो की छटा (राग हंस ध्वनि)	- श्रीवत्स शास्त्री (इन्दौर)	26-29
❒ कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभू	- सामंत भट्ट (उदयपुर)	30
❒ समाज के उर्जावान वरिष्ठ व्यक्तित्व	- श्री सुरेश रणा (दाहोद)	31-34
❒ How DNA is Used	- पुष्टि अमित कुमार शास्त्री (वडोदरा)	35-36
❒ Internet Of Things, जाति अस्तित्व	- कन्हैया भट्ट (वडोदरा), राकेश भट्ट (जयपुर)	37-38
❒ अभी तक भूला नहीं	- राकेश रणा (खरगोन)	39
❒ गजल, माँ	- हिरेश जोशी, कौशल पुराणी (वडोदरा)	40
❒ स्मृति शेष (प्रकाशचंद्र राणा)	- राकेश रणा (खरगोन)	41
❒ अंतरनिनाद, समझो	- श्रीमती रागिनी शास्त्री (दाहोद), श्रीमती किरण रणा (इंदौर)	42
❒ કુર્યાતસદામંગલમ	- केतन आचार्य (मुंबई)	43-46
❒ वाट्सएप और चेटिंग	- श्रीमती वंदना चौबे (इंदौर	47
❒ कैरियर मार्गदर्शन	- संदीप भट्ट (गांधीनगर)	48-49
❒ अभिनंदन पाठ	- मंडल द्वय	50-52
❒ मंडल पुरुस्कार एवं सहयोग राशि	- श्री आभ्यंतर केलवणी मंडल (वडोदरा),	53-55
❒ श्रद्धांजलि	मा.आ.औ ब्रा.मं. इंदौर	56

विशेष सूचना - 'कलश पूजा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के है संपादकों एवं मंडल का इन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। त्रुटिवश यदि मुद्रण दोष कोई है तो उसके लिए हम क्षमाप्रार्थी है।

अंक - 7
माह - फरवरी, 2024
मास - माघ शुक्ल एकम

प्रधान संपादक - अखिलेश शास्त्री
एवं
संपादकीय मंडल औदुम्बर कलश

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अखिलेश शास्त्री द्वारा आकृति ग्राफिक्स 17, आदर्श बिजासन नगर, सुभाष नगर चौराहा, इंदौर से मुद्रित एवं 138, नेताजी सुभाष मार्ग, श्री जगदीश चेम्बर्स,इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।

प्रधान संपादक : अखिलेश शास्त्री- मो. - 94250-65123

मंडल परिचय

सत्यकाम शास्त्री
अध्यक्ष

मनोज रणा
सचिव

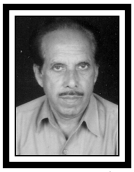
जी.एस. आचार्य
संयोजक

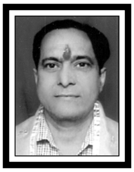
दीपक पंड्या
उपाध्यक्ष

राकेश रणा
उपाध्यक्ष (खरगोन)

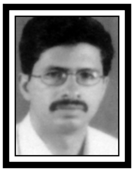
रजनीश रणा
कोषाध्यक्ष

अखिलेश शास्त्री
सहसचिव

अमित शास्त्री
सह कोषाध्यक्ष

विशाल रणा
प्रचार मंत्री

आशारानी आचार्य
महिला प्रतिनिधि

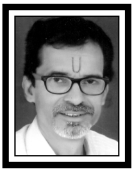
राजीव जोशी

संजय रणा

कमलेश जोशी

धर्मेश शास्त्री

यतिंद्र रणा

प्रतीक पंड्या

अभिषेक रणा

कामेश रणा
खरगोन

अभय रणा
खरगोन

सुमित रणा
खरगोन

धर्मेश रणा
देवास

शिक्षण समिति

श्रीमती रंजनाबेन
रणा

श्रीमती कृष्णाबेन
पंड्या

श्रीमती मधुबेन
जोशी

श्रीमती रश्मिबेन
रणा उज्जैन

श्रीमती कवितावली
आचार्य बड़नगर

श्रीमती सारिका
रणा खरगोन

श्रीमती श्वेता रणा
खरगोन

व्यवस्थापक समिति

श्री राजीवलोचन शास्त्री, श्री असित शास्त्री, श्री आदित्य शास्त्री,
श्री अभिषेक आचार्य, श्री कुशाग्र रणा, श्री विभोर रणा, श्री हिमांशु रणा, श्री आदित्य आचार्य,
श्री अभिषेक आचार्य (छोटू) (बड़नगर), श्री हिमांशु रणा (सन्नी), श्री सर्वेश रणा (सीतामऊ),

... संपादकीय

मेरे प्रिय आत्मन,

आज संपूर्ण भारतवर्ष में चहुंदिस एक उल्लासित,उष्मित एवं आल्हादित वातावरण है, छः सौ वर्षों बाद सनातन धर्म के आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम की जन्मस्थली पर रामलला की मूर्तिमंत प्राण प्रतिष्ठा हुई है। आर्यावर्त के भरतखण्ड में सुषुप्त सनातनी वीरों की शिराओं में जमा रक्त उष्मित हिलोरें लेकर तरंगायित हो वीरोचित भाव से वाणी से मंगल ऋचाओं द्वारा सस्वर प्रस्फुटित हो रहा है। सूर्यवंशी रघुकुल भूषण श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा ने हिंदुओं के सुप्त पड़े तेजोमय ओज को मुखर किया है। ऐसा लग रहा है हर सनातन के अंतर की अग्नि की पूर्ण शिखा प्रज्वलित हो गर्जन करने लगी है। प्रश्न यह उठता है कि हमनें राम की मूर्तिमंत प्राण प्रतिष्ठा की है,या राम हममें प्राणों को प्रतिष्ठित करता है। कहते भी हैं –

'रमन्ते इति राम'

अर्थात् हर मनुष्य में रमने वाले राम ही हैं।

'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च'

अर्थात् देह में रमने वाले आत्मतत्व ही राम है और उसी राम के कारूण्यमयी मूर्तिमंत स्वरूप के दर्शन करने पर यह अनुभूत हुआ कि सुप्तावस्था में जा चुकी हिंदुओं की वीरोचित चेतना के प्रादुर्भाव हेतु श्री राम कारूण्यमयी रूप में सिद्ध साधक द्वारा प्रकट हुए हैं। निश्चित उनका मंतव्य अपने आर्यपुत्रों की शीतल पड़ चुकी शिराओं में उष्ण रक्त का संचार कर सनातन धर्म को संपूर्ण वैभव से पुनर्प्रतिष्ठित करना प्रतीत होता है।

एक दुर्लभ संयोग यह है कि इधर रामलला का प्राकट्य हुआ और उधर वसंत ऋतु का पदार्पण होने जा रहा है,यह दोनों चेतना के उर्ध्व गमन का संकेत ही तो है। वसंत ऋतु जिसमें प्रकृति मानव हृदयोद्दीपन के अपने समग्र मायावी अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग करती है। सामान्य श्रृंगारित नारी भी स्वर्ग अप्सराओं जैसी सुंदर प्रतीत होती है,वन-उपवनों में खिलीं पुष्पावलियां भी नैसर्गिक सौंदर्य से स्वर्ग की अनुभूति कराती है, आम्रमंजरी की मादक वीथिकाओं की मादक गंध एक अदृश्य आदिम भूख को प्रवाहमान करती है। नवयुगलों में एकान्त कल्पना की कामना उत्पन्न होने लगती है और मानों सारा

जगत किसी नयी सुगंध से कालंजयी कृति की प्रसव वेदना को अनुभूत करने लगता है।सांध्यकालीन वेला में छोटी छोटी बाती लिए प्रियतमा वसुंधरा रात्रि में तारे के रूप प्रियतम गगन को सजाकर विरह की अनुमति प्राप्त करती है, तो प्रियतम गगन भी रात्रि में चन्द्रमा की कंदील भेंट करता है, पूर्णिमा की यह वासंतिक रात्रि में सरसराता मादक पवन यौवन रस में पगी कुआंरी सरिता से छेड़खानी करने की चेष्टा करता है तो नदिया उच्छृंखल द्रुत वेग से अपने प्रियतम सागर से मिलने जाती जो चंद्रमा की चांदनी में दूधिया दिखाई देती है,सागर भी अपनी प्रियतमा से मिलन हेतु तटबंध तोड़ने की चेष्टा में ज्वार पर आता, वनों के विन्यास में पशु–पक्षियों,कली–पुष्प सर्वत्र परस्पर एक दूसरे के प्रति प्रेम पूर्ण आकर्षण दृष्टि गोचर होता है।पलाश का पुष्प ऐसा प्रतीत होता है जैसे यौवन याचक पुरूष का ललाट,और मादक गंध ऐसी प्रतीत होती है जैसे आदिम पुरुष और प्रकृति के प्रणय यज्ञ से उठी धूम्र। मुक्त पक्षी नीलाकाश में चोंच में भरकर पराग और बीज का विस्तरण ऐसे करते हैं, जैसे नवोढ़े सौंदर्य से समूची धरा को नववधू सा सजा रहे हो, यही तो शाश्वत धर्म है। ऋतुराज वसंत इसका आदिम प्रवर्तक है,यह सब धर्मों से श्रेष्ठ आनंद प्रदान करने वाला है। यह मानव को मानव से मिलाने वाला है।श्रीराम का मूर्तिमंत प्राकट्य और वसंतागमन नियति है, संयोग नहीं आप सभी को इन दोनों पर्वो की हार्दिक शुभकामनाएं। महाकवि जयशंकर प्रसादजी की इन पंक्तियों के साथ

मंजरी मधुर गन्ध कानन पूरित,
मधुलोभी मधुकर निकर गुंजित
करत मुदित मन नवल सृजन
तुमसो सुखद और कौन है सुखन

आपका औदुम्बर कलशपूजा अंक आपको समर्पित सम्पादक मंडल ने श्रमसाध्य कर आपको समर्पित किया है, अंक कैसा लगा इसकी प्रतिक्रिया अवश्य दें। इस अंक में हमने संपूर्ण देश में उत्सव मनाते आभ्यांतर औदुम्बर समाज के सभी शहरों की चित्रावली का संयोजन कर एक अनूठा प्रयोग किया है। आपको कैसा लगा जरुर बताये। आपकी प्रतिक्रिया हमारा उत्साहवर्धन करती है और हममें सुधार की ओर प्रवृत्त करतीं हैं।आपकी रचनाएं भी सादर आमंत्रित हैं। शेष फिर........

हमारे ई-मेल आईडी
akhilshreejagdish123@gmail.com
manoj62rana@yahoo.in

आपका

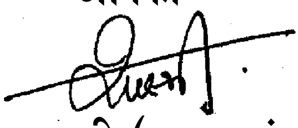

अखिलेश शास्त्री (प्रधान संपादक)

अध्यक्षीय

स्नेही स्वजाति बंधुओं,

एक छोटे से अंतराल के बाद आपसे वार्तालाप का अवसर प्राप्त हुआ है। पिछले अंक में मैंनें आपसे वादा किया था कि केलवणी मंडल के माध्यम से हम सभी मंडल पदाधिकारी एवं कार्यकारी अपने तन, मन, धन से मंडल की सेवा करने का प्रयास करेंगे और प्रभु श्री जगदीश के आर्शीवाद और आप सभी ज्ञाति बंधुओं के सकारात्मक सहयोग से हम टेलिफोन डायरेक्ट्री जिसमे हमारे समाज बंधुओं और वे परिवार जो पारिवारिक रुप से हमारे समाज के स ाथ रोटी बेटी के व्यवहार द्वारा सम्बद्ध हुए हैं उनके पते सहित प्रत्येक सदस्य का मोबाइल नं. होगा के प्रकाश ान की दहलीज पर आ चुके हैं और इसमे विज्ञापन के माध्यम से हम केलवणी मंडल के अर्थसंग्रह में एक बड़ी अभिवृद्धि करने का प्रयास कर रहे हैं।

पिछले माह जब हमारी केलवणी मंडल की बड़ौदा में बैठक हुई तब हमने बैठक के बाद टेलिफोन डायरेक्ट्री में विज्ञापन के माध्यम से समाजबंधुओं से लगभग एक लाख की राशि महज चंद घंटों में एकत्रित की थी। मैं वडोदरा के उन सभी समाजबंधुओं का आभार व्यक्त करता हूँ जिनने हमारे छोटे से अनुनय पर हृदय खोल हमें समाजहित में महत राशि प्रदान की।

जैसा मैं आपको पहले कह चुका हूँ, टेलिफोन डायरेक्ट्री की पूर्णता होते ही हम निकटतम समय में उसका विमोचन एवं संपूर्ण समाज हेतु एक वृहत साधारण सभा आयोजित करेंगे। जिसमे प्रखर युवाओं के स म्मान, विभिन्न प्रकार की समाज की गौरवमयी प्रतिभाओं का सार्वजनिक ज्ञाति मंच पर यथोचित सम्मान एवं समाज के रीतिरिवाजों जिनमे जन्म विवाह एवं मृत्यु तक एक ज्ञाति के अनुभवी विद्वानों की सार्वजिनक परिचर्चा भी आयोजित करने का प्रयास करेंगे। भावी भविष्य में केलवणी मंडल के माध्यम से समाजहितार्थ किन

किन बिंदुओं पर हम सकारात्म पहल कर सकते है यह भी मंथन करेंगे। मैं सभी समाजबंधुओं से इस हेतु आप सभी से व्यक्तिगत सुझाव भी आमंत्रित करता हूं। आप अपने सुझाव मुझे तक अवश्य भेंजे।

मंडल की सृजनात्मक गतिविधियां तो निरंतर बैठको के माध्यम से चल ही रही है और इसमे समाजजनों का प्रशंसनीय सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। परंतु विगत कुछ दिनों से समाज के व्हाट्सअप ग्रुप पर एवं व्यक्तिगत रुप से यह दुष्प्रचार किया जा रहा है कि मंडल कार्य भी नहीं कर रहा है और साधारण सभा के माध्यम से चुनाव भी नहीं करवा रहा है और विद्यार्थियों को पुरुस्कार राशि भी प्रदान नहीं कर रहा है। जबकि हकीकत इसके बिल्कुल विपरित है। मंडल अपने को प्राप्त अंकसूची पर विचार विमर्श कर मंडल के प्रावधानों के तहत राशि वितरण चेक के माध्यम से कर रहा है। फिर भी यह भ्रम फैलाया गया कि कामकाजी विद्यार्थियों या सक्षम विद्यार्थियों को पुरुस्कार की राशि नहीं दी जा रही है। मैंने संपूर्ण तहकीकात की तो पाया कि मंडल की समिति ने मंडल के बंधारण को दृष्टिगत रखते हुए यह निर्णय लिया था। परंतु उसे इस तरह प्रचारित किया गया जैसे मंडल में तानाशाही चल रही हो और मंडल व्यक्ति विशेष को टारगेट कर रहा हो। यद्यपि फिर भी हमने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि कोई भी विद्यार्थी केवल सुदृढ़ आर्थिक आधार के कारण सम्मान और राशि से वंचित नहीं रहना चाहिए।

मंडल के पदाधिकारियों ने आपसी टेलिफोनिक विमर्श के बाद सभी अंकसूची प्राप्त मेघावी विद्यार्थी चाहे वह आर्थिक रुप से सक्षम हो या आजिविका कमाते हो सब को तत्काल प्रभाव से चार चार हजार रुपये की राशि के चेक प्रत्येक विद्यार्थी को वितरित करने का निर्णय लिया और मूर्त रुप दिया। जिसकी सूची इस अंक में विधिवत दी जा रही है और आगे भी कभी बंधारण के कारण इस कार्य में रोड़ा न आये इस हेतु इसे इस बिंदु को साधारण सभा में विश्वास मत के द्वारा पारित करने का निर्णय लिया है।

मैं पहले भी कह चुका हूँ सत्ता से चिपकना हमारा उद्देश्य नहीं है। समाज सेवा हमारा चेरिटी मिशन है कोई धंधा नहीं है। हम बिना किसी पद अहंकार से समाजसेवा से जुड़े हैं, किसी को भी

नीचा या हीन नहीं समझते, प्रत्येक समाजजन जो देश में कहीं भी निवासरत हो, समाज के शैक्षिक या अन्य कोई प्रोत्साहन कार्यक्रम में उसका समान अधिकारी है चाहे व आर्थिक रुप से समक्ष हो या अक्षम।

आगे इस तरह के मुद्दों न फैलाये जाए इस हेतु मैंने केलवणी मंडल के लिए एक नया शैक्षणिक व्हाट्सएप ग्रुप बनाने का विचार किया है। जिसमे विद्यार्थी स्वयं अपनी मार्कशीट भेजे। प्राप्त सभी मार्कशीट को मंडल समान राशि से पुरुस्कृत एवं सार्वजनिक मंच पर सम्मानपत्र प्रदान करेगा। किसी प्रकार का कोई आर्थिक विभेद नहीं होगा। इसी प्रकार यदि मंडल की अन्य किसी भी गतिविधि से किसी को शिकायत हो तो वह मुझे व्यक्ति रुप से व्हाट्सएप के माध्यम से भेजे उसका तुरंत निराकरण होगा। सभी विपरित विचारधारा वाले व्यक्तियों से य ह निवेदन है कि वह शिकायतें सार्वजनिक ग्रुप में भ्रामक रुप से प्रचारित करने के बजाए हमसे व्यक्तिगत संपर्क करेंगे तो उचित होने पर तुरंत निराकरण भी होगा और समाज की शालीनता की मर्यादा का लंघन और व्यक्तिगत संबंधों में कोई मनमुटाव भी नहीं होगा। समाजहित में हम एक -एक मिलकर ग्यारह बने यही अपेक्षा एवं विश्वास है। पिछले माह हमारे इंदौर में होली मिलन के अवसर पर हमने समाजजनों से शैक्षणिक पारितोषिक न बांटने का मुद्दा साझा करने पर एक बड़ी घटना हुई। समाज की एक वरिष्ठ महिला श्रीमती मधुबेन राजीवलोचन जोशी जो पहले अध्यापिका थी अब निजी प्रतिष्ठान में नौकरी कर रही है उन्होंने हमारी इस पहल पर एक लाख रुपये की महत राशि स्वयं प्रेरणा से उत्साहित होकर मा.आ.औ.ब्रा. मंडल इंदौर के शैक्षणिक कार्यों के लिए एफडी बनाने हेतु दी जिसके ब्याज से सभी विद्यार्थियों को पारितोषिक वितरण किये जाने का निवेदन. करते हुए तुरंत प्रभाव से खुद के खाते से चेक प्रदान किया। हम उनके हृदय से आभारी है।

प्रभु श्री रामलला के प्रतिष्ठा पर आप सभी को हार्दिक बधाई।

एक इष्ट, एक अभीष्ट........................जय जगदीश

आपका

सत्यकाम शास्त्री

उप प्रमुख श्री आ.औ.केलवणी मंडल वडोदरा

अध्यक्ष मा.आ.औ.ब्राम्हण मंडल इंदौर

मंत्री की कलम से...

शिशिरकुमार के. आचार्य
कार्य. सहमंत्री अहमदाबाद
9725001600

સુજ્ઞ જ્ઞાતિબંધુઓ "સાદર નમસ્કાર"

મકર રાશિના સૂર્યના સક્રાંતિના સમય માં ઔદંબર કળશ પુજા દ્વારા આપ સર્વે ને લેખનરૂપી મુલાકાત કરવાનો અવસર પ્રાપ્ત થયો એ બદલ ઈષ્ઠદેવ શ્રી દેવગદાધર શામળાજી અને સર્વમંગલા માતેશ્વરી ના ચરણોમાં સાષ્ટાગ પ્રણામ સાથે કેળવણી મંડળમાં વર્ષ ૨૦૨૨-૨૦૨૩ દરમિયાન મળેલ પુરસ્કાર ફ્રોમ ને આધીન મંડળ ની વ્યાજ ની રકમ પરત્વે કુલ ૫૦ ઉમેદવારોને પુરસ્કાર રાશી નું વિતરણ કરાયું છે.

મંડળ ની મૂળ કોપર્સ ફંડ ની ક્ષમતા ઓછી હોવા ના લીધે હજુ પણ જે કેળવણી મંડળ દ્વારા કરવા ના થતા કર્યો કરી શકાતા નથી જેથી ગત અંક માં પણ સર્વે જ્ઞાતિબંધુઓ ને આર્થિક રીતે સંપન્ન સમૃદ્ધ શ્રેષ્ઠ પરિવારજનો ને અપીલ કરાયેલ હતી પરંતુ સમાજના તમામ વર્ગો ધ્વારા એક સાથે એક મતે મંડળ ના કોપર્સ ફંડને આગળ વધારવા માટે સંકલ્પના લેવાય

તમામ આયામો સાથે અન્ય તમામ વિવાદો ને અવગણીને માત્ર શિક્ષણ પરત્વે આપના સમાજના શિક્ષણ લેતા વિદ્યાર્થીઓ/વિદ્યાર્થીનીઓ માટે જુદા જુદા ક્ષેત્ર માં શિષ્યવૃત્તિઓ,પુસ્તકો,નોટબુકો,કેળવણી અંતર્ગત અન્ય ઘણી બધી રીતે વિદ્યાર્થીઓ ને સહાય રૂપ થવાય એ દિશા માં સમસ્ત જ્ઞાતિબંધુઓના વિદ્યા વિષયક બાળકો માટે ૪૦૦૦/- થી વધુ રકમ દરેક વિદ્યાર્થીઓ ને પુરસ્કાર રાશિ મળે એ રીતે મંડળ ને આર્થિક ભંડોળ મળે તો કેળવણી મંડળ ધ્વારા હજુ ઘણી બધી પ્રવૃત્તિઓ ને સામજિક રૂપે ન્યાય આપી શકાય એવી અનંત શક્યતાઓ રહેલી છે

પુનઃસર્વે જ્ઞાતિબંધુઓને એક અપીલ સાથે મંડળ નું ભંડોળ વધે એ સમય ની માંગ છે અને ઘણી બધી પ્રવૃત્તિઓ પાછલા ૨૦ વર્ષ માં નથી થવા પામી તે મંડળ ધ્વારા પ્રવૃત્તિ થાય એ શુભ ઉમદાહેતુ માટે મંડળ નું ભંડોળ વધે એ બાબતે અમલી બને એ નિતાંત આવશ્યક અને અનિવાર્ય છે ...

અસ્તુ......સહકાર ની અપેક્ષ સહ........

આપનો વિશ્વાસુ
આભ્યંતર ઔદુમ્બર કેળવણી મંડળ વતી કાર્યકારી મંત્રી
શિશિર કૃષ્ણવલ્લભઆચાર્ય ના સાદર વંદન

कलश वैचारिकी

'' तुम जिसका सृजन करो वह कलाकृति उत्कृष्ट हो यह जरुरी नहीं। सूक्ष्मता से चित्त का सृजन हो, यही महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमे आपके लिए निजानंद छुपा होता है और यही जीवन के लिए आवश्यक है।'' समसामायिक विषय पर बहुत ही तार्किक विचार अत्यंत भावपूर्ण तरीके से व्यक्त कर रहे है हमारे विद्वत वरिष्ठ साहित्यकार रणा हितेन्द्र अग्निहोत्री

प्र.सं.

कलश वैचारिकी

इसबार कलश वैचारिकी में कुछ नयापन सुझा है। हर नये नये माता पिता, उन सब के हर नये नये, छोटे छोटे बच्चे, बच्चों की स्कूल, स्कूल के टीचर, उनका परिवार, परिवेश, सामाजिक, शिक्षात्मक पर्यावरण, शिक्षा प्रणाली, हमारा पेरेन्टिंग, हमारा पालीपन, बच्चों के साथ हमारा व्यवहार, उनसे उठते प्रश्न, और फिर मैं स्वयं शिक्षक, मेरा शिक्षकत्व, और मेरी शैक्षणिक संवेदना इन सबको द्रष्टिगोचर करते हुए कुछ नयापन सुझा है। इसलिए इसबार कलश वैचारिकी का विषय भी ऐसा ही नया नया है।

आईए हमारे गुजरात के सुप्रसिध्ध कवि क्रुष्ण दवे की रचना से प्रारंभ करते हैं।

आ सधळां फूलोने कही दो युनिफोर्ममां आवे
पतंगियाओने पण कही दो साथे दफतर लावे
मन फावे त्यां माछलीओने आम नहीं तरवानुं
स्वीमिंगपुलना सधळां नियमोनुं पालन करवानुं
दरेक कूंपळने कोम्प्युटर फरजियात शीखवानुं
आ झरणांओने समजावो सीधी लीटी दोरे
कोयलने पण कही दो-ना टहुके भर बप्पोरे
अमथुं कें आ वादळीओने एडमिशन देवानुं ??
डोनेशनमां आख्खे आख्खुं चोमासुं लेवानुं !!!

क्रुष्ण दवे.

काव्य मजेदार है। पढतें हैं तो हम मन ही मन हसतें हैं। क्योंकि ऐसा तो कभी होता नही। पर कवि ने काव्य के माध्यम से यह बता दिया है कि-हम सब मनुष्य प्रकृति को भी हमारे आधीन करना चाहतें हैं। बच्चे भी तो प्रकृति का एक निर्दोष अंग है - या युं कहिए कि बच्चों के माध्यम से प्रकृति भी बचपन में जीना चाहती है। पर एक हम है जो न तो प्रकृति को उसकी निज लीला से पनपने देते है ; न हम बच्चों को उनके बचपन में जीने देते हैं। क्रुष्ण दवे की ही एक रचना है जिसमें उन्होंने लिखा है।

रोज परीक्षा -रोज परीक्षा - रोज परीक्षा - दईए
कां तो स्कूलमां - कां टयुशनमां - कां टेन्शनमां रहीए
भाई ! नथी एकला पास थवानुं - टका जोईए घणां मोटा
अमारी नानी नानी मुठ्ठीओ पासे पकडावे परपोटा
H_2O ने गोखी गोखी क्यांथी झरणुं थईए ??????
कोणे धडी छे आ सिस्टम जेमां अमे फसाया छीओ
रोज परीक्षा -रोज परीक्षा - रोज परीक्षा - दईए ????

(1)

वर्तमान समय में पढ़ने का अर्थ मात्र परीक्षा ही है। सभी स्कूल स्पर्धक पैदा करने की एक बडी फेक्टरी बन चूकी है। मिश्री स्फटिक रूपमें है पर मधुरता का अभाव है - स्कूल तो है पर जीवन की मधुरता कहीं द्रष्टिगोचर होती नही। स्कूल कहता है हम तुम्हें H_2O का सूत्र रटा देंगे किन्तु झरना नही बनाएंगे। झरने का डान्स, उसकी खल खल ; उसका माघुर्य और झरने का झरने से नदी - नदी से महानद - महानद से सागर बनने का भविष्य जैसे अंधी दौड है। आज की शिक्षाप्रथा से सरकार भी धृतराष्ट्र है और माता-पिता गांधारी बनके बच्चों के प्रति जैसे अंधे युगमें रोशनी की तलाश करते नजर आ रहे हैं। स्कूल क्या है जैसे फीस भरने पर रटी-रटाई रटेपन की बैंच पर बैठने की रोकी हुई एक जगह !

स्कूल अभ्यास का एक ही अर्थ रह गया है, आपने कितने परसंटेज प्राप्त किए ? आपके परसंटेज आपका चरित्र है - कैरेक्टर है। आप कितने सुशील -सभ्य- संस्कारी-भावना प्रधान- राष्ट्र प्रेम से भरें हैं, या आपने अपने व्यक्तित्व को एक मौलिकरूप से विकसित किया है उसकी कदर किसीको नही है। यदी आपके पास 100% से भी उपर के परसंटेज है - आप का वार्षिक पेकेजिस लाखों में है ; करोडों में है ; और आप एक संपत्तिवान कुल के वंशज है -तो स्कूल में आप एक सर्वश्रेष्ठ होंशियार विद्यार्थी हैं, जैसे कहा गया है न ''सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति'' । आपके व्यक्तितत्व की मुखरता का आधार केवल पैसा ही है।

कंईबार ऐसा लगता है कि श्री राम ने सीताजी को पाने के लिए जितनी सरलता से शिवधनुष को उठा के तोड दिया था , या गोकुल को इन्द्र के प्रकोप से बचाने के लिए बालकृष्ण ने अपनी कनिष्ठिका पर जितनी सरलता से गोवर्धन को तोक कर समस्या का एक दम सरलता से निवारण किया था, इतनी सरलता से शिक्षाप्रथा - शैक्षणिक माहोल और अभ्यासकीय कारकीर्दी का, जीवन को बचाकर जीवन के विकास के नैष्ठिक कर्म तक पहुंचना, अब उतना सरल और सीधा नही है। पूरी सिस्टम को उघई लग चूकी है। जो जीवन को- बचपन को और भविष्य में होने वाले जीवन विकास को खोखला कर रही है। एक कहानी सुनी थी...

एकबार जंगल में सभी जलचर -भूचर -पशुओं कि सभा का आयोजन हुआ। जिसमें ऐसा तय हुआ कि - जंगल का वही जीव सर्वश्रेष्ठ है जो ऊंचे से ऊंचे वृक्ष पर कम से कम समय में चढ जायेगा। सभी प्राणीओं को चिंता होने लगी की हम क्या करें तो ऊंचे से ऊंचे वृक्ष पर कम से कम समय में चढ जाएं और हमसे यदि ऐसा नही होता है तो जीवन जीने का कोई मतलब नही है। सबने निश्चित किया कि - यदि ऊंचे वृक्ष पर कम से कम समय में चढने का कौशल्य सीखना है तो नोन ग्रान्टेड कोचिंग इनस्टिटयुट खोलनी पडेगी। जंगल के राजकारणी पशुओं के दल ने सुपर कोचिंग इनस्टिटयुट खोल दी। और फिर क्या था ... जंगल के सभी प्राणीओं ने उस इनस्टिटयुट में दाखिला लेने के लिए दौड लगाई ..... उसमें हाथी,जिराफ,ऊंट,शेर,सिंह,चिता,मगर,सांढ,भैंस,व्हेल,शार्क सब ने

(१)

अपनी अपनी औलादों के एडमिशन के लिए प्रयास किया। जिन राजकारणी पशुओंने यह कोचिंग खोला था उन्होंने उसकी ब्रांच खोलना शुरू किया, सभी को एडमिशन मिल गया। सभी प्राणी-पशुओं को एक आश्वासन मिल गया कि हमारी संतानें कोचिंग में जाकर ऊंचे वृक्ष पर कम से कम समय में चढने के कौशल्य में हाई परसंटेज के साथ रिकोर्ड तोड सफलता प्राप्त करेगी ही। हाथीने तो उपर चढने के लिए कितने ही वृक्षों का निकंदन कर दिया ; छोटी बडी मछली, व्हेल, शार्क ; अपने बच्चों को किनारे जैसे तैसे करके लाती थी ; माता - पिता उन्हें पानी से बहार खदेडते थे ; और पानी में पुनः प्रवेश करने के लिए वह हाथ में जोर से कूद कर जमीन पर गिरती थीं ; तो माता - पिता खुश होते थे कि यह तो गजब हो रहा है, हमारी संतानों में, कोचिंग में जानेकी इतनी उत्सुकता है कि वह कि वह हवा में ही कितनी ऊंची उछल रही है !!पर उन्हें यह पता नही चला कि पानी के बिना उछल कर वह अपना प्राण त्याग कर रही हैं। मित्रों ! गजराज तो डिप्रेसन से ही पागल हो उठा कि एक बंदर इतनी ऊंचाई सिध्ध कर लेता है और मैं अपने पैर भी वृक्ष पर नही रख पाता !! मित्रों आप समझ चूके हैं कि - जंगल की इस कोचिंग दौड में जब कोई सफल नही हो पाए तो अपने बच्चों सहित प्राणियों ने -माता पिताओं ने सामुहिक आत्महत्या कर ली।

मित्रों ! बात भले ही काल्पनिक हो ; किन्तु अर्वाचीन शिक्षण प्रणाली में यह बिलकुल सत्य है। कोटा फेक्टरी इसका सर्वाधिक सत्य है। वाली हो- माता पिता हो - संस्था हो या विद्यार्थी, या शिक्षक हम सबको यह समझना होगा कि - मेरी संतान हाथी है- शेर है- सिंह है - जिराफ है या मछली या किडी ?? प्रकृतिने सबको एक समान नही बनाया है। हर माता-पिता को हर बच्चों को हर विद्यार्थी को यह समझना होगा कि प्रकृति ने मुझे खूबियों से गुणों से भरा है उन खूबियों और गुणों की सहायता से उनकी पहचान के बाद ; हमारी प्रकृति के अनुसार जीवन की सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में हम हमारे जीवन के विकास की और कैसे उच्चतम सिध्धियों को प्राप्त कर सकतें हैं, वह प्रथम सीखना होगा, पहचानना होगा। प्रकृति के प्रयोजन में कीडी का भी एक अस्तित्व है। वह हाथी नही बन सकती। कीडी के पास जमीन में दर बनाकर रहने की क्षमता है, तो उसकी घ्राणेन्द्रिय इतनी तेजस्वी है कि वह कहीं भी हो मिठास तक पहुंच ही जाती है ; हाथी दादा यह नही कर सकते ! जितनी चपलता से गिलहरी (खिसकोली) ऊंचे से ऊंचे वृक्ष या बहु मंजिला इमारत पर चढ कर अपनी पूंछ को मरोडकर, ऊंची करके जो आनंद प्रगट करती है ; या एक पक्षी अपनी चकचकाहट से मधुर स्वर लहरियों के साथ उड उड कर वृक्ष की एक शाखा से दूसरी शाखा पर जा सकता है - क्या शेर-सिंह-मगर-व्हेल ऐसा कर सकतें है ??

मित्रों ! हमें हमारे बच्चों की क्षमताओं से परिचित होना होगा। हम सबको एक समान शिक्षा और तालिम से प्रतिसंस्कारित नही कर सकते, हम सबको एक समान विषय का अभ्यास नही करवा सकते।

(३)

OSHO ने कहा था -

- "Seve humen behaivior First Parents Should love there Kids as they are "

अष्टसूत्री बालोपनिषद - वशिष्ट धर्मसूत्र 13/48 के संदर्भसूत्रों को देखें।

- बालकाः बालचक्षुभ्यां द्रष्टभ्यां बोध्व्यां आदरणीयाश्च ॥

बच्चों को बाल द्रष्टिकोण से देखो ; उनकी बालचेष्टा का अनादर करने के बजाय वह जैसे हैं उनके बचपन का स्वीकार करो।

- व्यक्ति वैशिष्टयं सम्मानीयम् ॥

हर व्यक्ति में कुछ न कुछ विशेषता है - हमें उसका सम्मान करना चाहिए।

- बालकै कुतूहल - क्रीडा - क्रियादयः नैसर्गिकाः प्रवृत्तयः आदरणीयाः दमनं न कार्यम् ।

बालकों में कुतूहल प्रवृत्ति - खेलप्रवृत्ति - क्रियाशीलता - चंचलता - जिज्ञासा- यह सब प्रकृत्तिदत्त प्रवृत्तियां होती है ; उसका आदर करें, उनका दमन करने से उनका जीवन विकास नही होगा।

- बाल शिक्षण काव्य, कथा,संगीत,चित्र,विनोदयुक्तः ॥

बाल शिक्षण साहित्य -संगीत-कला-कहानियां और काव्य से परिपूर्ण होना चाहिए।

- बालदेवो भवः ॥ बालक तो प्रभु का स्वरुप है।

और यही कारण से प्रभु वल्लभाचार्यजी ने चौदह ब्रह्मांड के स्वामी, गीताके गायक योग योगेश्वर की पूजा-भक्ति में बालस्वरुप को ही प्रधानता दी। प्रभु को छोटे बालक के रुपमें भक्ति का माध्यम बनाया । क्योंकि यदि आप बालक को भजते हो तो - आप बालसंवेदना से भर जाओगे। उसको अनेक रंगो से, प्रसादों से भर दोगे। आप बालस्वरुप समक्ष उसको जो पसंद है उसी रुपमें पेशकश करोगे। **जो तुमको हो पसंद वही बात करेंगे** । आप उससे कुछ मांग भी नही सकते आप को देना ही है और वह भी लाड प्यार से ओत प्रोत होकर।

अभी अभी मैंने दिव्य भास्कर की कोलमनिस्ट और जानी-मानी लेखिका व स्पीकर रश्मी बंसल को **अभिव्यक्ति डिफ्रन्ट एन्गल से** में पढा -

वह कहतीं हैं कि - वह स्कूल में दसवीं में टोपर थी। परिवार के सभी लोग सोचते थे कि यह लडकी मेडिकल या एन्जिनियरिंग करेगी, पर उसकी मानसिकता इस योग्य थी ही नही । रक्त देखकर उसे चक्कर आतें हैं, और गणित के आंकडें और फोरम्युला देखकर बुखार आ जाता है। पर मैंने आर्टस को चूना और आर्टस में भी इकोनोमिक्स लिया। कोलेज के तीन साल तक भारी भारी पूस्तकों का बोज सहन किया ; बहुत कुछ रटना पडा तब जाके अच्छे परसंटेज से सफलता मिली।

अब इतने वर्षों के बाद उसके मनमें प्रश्न उठ रहा है कि- बी.ए इकोनोमिक्स के साथ, इतना रटने के बाद, पढने से मुझे जीवन में क्या कोई आनंद - सुख या फायदा

(4)

मिला क्या ?? ऐसा तो क्या ज्ञान मिल गया जो मेरे आज के वर्तमान जीवन से संबंध रखता हो ?? और यही प्रश्न बी.टेक की डीग्री लेने के बाद भी पूछ सकते हैं। चार साल के बी.टेक अभ्यास के बाद भी लाडले एन्जियर को उडा हुआ फयुझ या सरकीट की सीरीज सुधारते नही आती। आप कभी देखना। आपके घरमें इलेक्ट्रीक लाईन या फिटिंग करने वाला एक कोमन सा लडका आता है। वह इतनी त्वरा से चालु लाईव लाईनमें जो आसानी से काम कर जाता है देखने जैसा होगा। आप उसे पूछेंगे क्या तुमने इस विषयक डीग्री ले रखी है ? उसका जवाब होगा **ना**। पर वह यह तो जरुर कहेगा कि हम जिस तरह काम करतें है वह तो बी.ई ईलेक्ट्रिक या बी.टेक भी नही कर सकता। उनको तो हम समझाते हैं। हमारी शिक्षण व्यवस्था में प्रेक्टिकल नोलेज का तो कोई महत्व है ही नही, बस आप तो रटे- रटाये पेपर लिखिए और हाई परसंटेज लाईए। हम बाजार सें बहुत महेंगे और अच्छी किस्म के बासमती चांवल देखकर लाते हैं। पर आप चांवल से बनी ढेरों वानगियाँ बनातें ही नही। आप तो पुलाव खाने के लिए होटल ही पसंद करते हो, क्यों ? क्योंकि होटलवाला तालीमबध्ध शेफर से ही, हटकर पुलाव बनवाता है- **इस हटकर पुलाव** के लिए उसे तालिम और प्रेक्टिकल जरुरी है।

स्कूल और कोलेज में भारी भरकस पुस्तकों का वजन है, जो जीवन में कितना उपयोगी है यह आज की शिक्षा प्रथा के लिए चिंतनीय विषय है। कुछ हद तक आप अपना समय कालेज में देकर व्यक्तिगत विकास कर सकते हो। स्कूल में तो माता - पिता और शिक्षकों की छत्रछाया होती है, किन्तु कोलेज में कुछ गिने - चूने ही प्राध्यापक मिलेंगे जो आपके लिए गाईड और फिलोसोफर हों। वहाँ आपके लिए उडने को आकाश जरुर मिलेगा पर उस उडान से आप गतिहीन - ध्येयहीन भी हो सकते हो, और चाहो तो एक विशेष ध्येय की प्राप्ति भी कर सकते हो, और हजारों मानसिकताओं की पहचान करके सत्य और विकास के मार्ग को चून भी सकते हो।

- आपको एक खूला आकाश मिला है|कहाँ उडना? कैसे उडना ? किस गति से उडना? और ध्येय प्राप्ति की दिशा में युवापन की उर्जा को कैसे रुपांतरित करना यह सब हमें क्या सिखाया जाता है ?

-क्या आपने लाईब्रेरी की मुलाकात ली? बंद अलमारियों से आपके हाथों में आकर दिल दिमाग में बिराजित होने को लालायित पुस्तकों की आहट को, स्वागत भाव की भाषा को क्या आपने कभी समझा ?

- उम्र कोई भी हो - आपकी डीग्री की लाईन कोई भी हो - पर यदि आपके मन में आए कोई काव्य -गीत- गजल आप ढूंढना चाहतें हैं - या आपसे सर्जित होने को आहवान कर रहा है तो देर किस बात की है ? पहले पढें। कुछ सुनें। और बाद में मन के आंगन में उसे उतरने दें। बस आपकी उर्जा ने रुपांतरित हो कर सर्जक बनने का श्रीगणेश कर दिया है।

(5)

- स्कूल और कोलेज में जब कभी मौका मिले स्टेज पर आने का, माईक के सामने बोलने का - या अभिनय करने का या अपनें विचारों को प्रस्तुत करने का तो, बेझिझक कूद पडो - डान्स में रस है तो पैरों को थिरकने दो ; नृत्य को आने दो, हाथों को, शरीर को अंगभंगिमा से आकारित होने दो, आप कलाकार बनने को है।

- पेपर के टुकडों से - फटे केलेन्डर्स के चित्रों से - कतरन की रद्दी से जो आप का मूड जमे ऐसा चित्र, चिपका चिपका कर बनाएं, उसको प्यारा सा शीर्षक दें - चित्र को अपनी भाषा में पारिभाषित करने का प्रयास करें ; आप एक अच्छे चित्रकार बनने को हैं।

- मित्रों ! मैं एक शिक्षक था ; हूं और रहूंगा। मुझे मेरी मस्ती के जो भी क्षण मिले ;मेरी रसरुचि के अनुसार जो भी करने को मिला, मैंने उसे प्रसाद बनाकर मेरे विद्यार्थीओं में बांटा है- उसका एक फायदा यह हुआ कि मैंने मेरे स्व को ढूंढा - खोजा और विकसित हुआ, और दूसरा मैंने प्रसादको मेरे विद्यार्थीओं में बॉंटा ; आप दूसरे को क्या दे सकते हो ?? उसका एक ही यथार्थ उत्तर है जो आपके पास हो वही तो दे सकते हो।

मित्रों! आप से शिक्षाप्रथा - शिक्षण - विद्यार्थी - बालमानस - और वर्तमान शिक्षाप्रथा के विषय में बहुत चिंतनात्मक बातें करनी है और करुंगा । अब कलश वैचारिकी के माध्यम से इस विषयको लेकर लिखने का मन कर रहा है। अभी तो आप से केवल यही कहना है कि स्कूल और कोलेज में कंई शिक्षक प्राध्यापक ऐसा मानते हैं कि, **अेकस्ट्रा करिक्युलर एक्टिविटीझ** (पुस्तक, परीक्षा, रटे रटाये प्रश्न - बोरिंग थीयरी) के बाहर जो प्रवृत्तियां होती है, वही विद्यार्थी की घडाई करती है - उसके आत्मविश्वास को जागृत करती है भले ही कोई माने कि, यह **वेस्ट ओफ टाईम एक्टिविटीझ** है, तो यह गलत है। पर मैं ऐसा मानता हूं कि यह भी क्लासरुम के बाहर का एज्युकेशन है। जिसे हम लाईफ स्किलस ट्रेनिंग भी कह सकते हैं।

डिग्री होना या न होना - अब तो मौके ही मौके है, बस मनमें द्रढ निर्धार होना चाहिए ; बच्चों की, युवाओं की नाव कागज की बनी हुई है ; जिसके उपर परसंटेज -फरस्टक्लास -पास -फेल और डीग्रीओं के नाम लिखे रहते है ; इस नाव पर इतना बोझ मत डालो, कि वह जीवन सागर में तैरने के बजाय डूब जाए।

कुछ पढी हुई पंक्तियों से इस कलश वैचारिकी को अल्प विराम देते हैं ॥

- हुं मझामां होउ छुं, पण मुझमां मझा होती नथी।
  दोस्त! अेनाथी वधु मोटी कोई रजा होती नथी।
  केटलुं थाकी जवातुं होय छे, पण शुं करुं ?।
  इच्छानी ओफिसमां रवीवारे रजा होती नथी।

- सोचा था पढ-लिखकर, घर बनाकर ;
  बैठूंगा सुकुन से ......पर घर की जरुरतों ने मुझे मुसाफिर बना डाला।

रणा हितेन्द्र अग्निहोत्री
दोहद
Mob - 9773200370

(6)

संध्योपासन ब्राह्मणत्व की अनिवार्यता है। इसे कैसे, किस स्थान पर और किन काल परिस्थितियों में कैसे करना चाहिए इस हेतु शास्त्रोक्त दिशा निर्देशों को सुंदर रुप से उल्लेखित करता हमारे विद्वत वरिष्ठ नलिनभाई भट्ट अपनी प्रेरणादायी लेख से कर रहे हैं।

प्र.सं.

अहरहः संध्यामुपासीत। (प्रतिदिन संध्या करे)

संध्या क्या है

संध्या शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है।

''सन्धौ भवा सन्ध्या'' अर्थात् सन्धिकाल में की जाने वाली उपासना अथवा

''संध्यायन्ति संध्यायन्ते वा परब्रह्म यस्यां सा सन्ध्या'' अर्थात्

जिस काल में परमेश्वर का ध्यान अच्छी प्रकार से किया जाए यही संध्या है। अभिप्राय यह है कि सन्धिकाल (प्रातः एवं सायं) में परब्रह्म की कृपा के लिए किया जाने वाला कार्य संध्या कहलाता है।

जीवन का परम लक्ष्य है जीव द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति। परंतु इसके लिए साधना की आवश्यकता है। जीवात्मा जब भगवान के गुणों को अपने हृदय में धारण कर व्यवहार में लाता है तभी भक्त कहलाता है। अतः ईश्वरीय भक्ति जीवात्मा की प्राकृत आवश्यकता है।

मनुष्य अज्ञान का भ्रमवश कर्तव्या कर्तव्य का ध्यान नहीं रखता है। अथः इस दोष से मुक्त होने के लिए मनुष्य को उपासना अवश्य करनी चाहिए। जिस प्रकार स्वच्छ तथा उत्तम भोजन करने से शरीर स्वच्छता को प्राप्त करता है उसी प्रकार परब्रह्म की उपासना से यह जीवात्मा उत्तरोत्तर उन्नत अवस्था को प्राप्त कर पाता है। परमात्मा की उपासना के बिना जीवात्मा की उन्नति असंभव है। उन्हीं साधनों में संध्या प्रथम एवं परम सोपान है। इसके करने से मनुष्य का अंतः करण शुद्ध होता है। और उपासना के दूसरे सोपानों पर चढ़ने का अधिकारी बनता है।

संध्या की आवश्यकता

संध्योपासना द्विज मात्र के लिए परम आवश्यक कर्म है। तन मन से संध्योपासना का आश्रय लेने वाले जीव को स्वल्पकाल में ही परमेश्वर की प्राप्ति हो जाती है। अतः द्विजातिमात्र को सन्ध्योपासना में कभी प्रमाद नहीं करना चहिए।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है।

यस्तु केवलां संधामुपासीत स पुण्यभाक्
तां परित्यज्य कर्माणि कुर्वत प्राप्नोति किल्बिषम्

अर्थात - जो केवल संध्योपासना करता है वह केवल पुण्य का भागी है और जो संध्या न करके अन्य सत्कर्म करता है वह पाप का भागी होता है। अंग्रेजी में एक कहावत है।

संध्या प्रायश्चित कर्म

Repentance is no sin

अर्थात अपने किये हुए दुष्कर्मों पर पश्चाताप करना पाप नहीं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि यदि मनुष्य स्वच्छ हृदय से अपने किए हुए दुष्कर्मो पर पश्चाताप करता है तो वह पाप का भागी नहीं होता। हमारे यहाँ इसी पश्चाताप के लिए प्रायश्चित शब्द है। प्रायश्चित इसलिए किया जाता है कि हमसे जो दुष्कर्म बन पड़े है उनके लिए हमें दुख है और इस प्रायश्चित कर्म से हम आशा करते है कि इस प्रकार से हम भविष्य में ऐसे कर्मों का पुनः आचरण नहीं करेंगे। इस दृष्टि से सन्ध्योपासना एक प्रकार से प्रायश्चित कर्म भी है। इस प्रकार संध्या नित्य एवं प्रायश्चित कर्म है।

सन्ध्या करने के लाभ

जो लोग दृढ़ प्रतिज्ञ होकर प्रतिदिन नियम रुप से सन्ध्या करते है, वे पाप रहित होकर अनामय ब्रह्मपद को प्राप्त होते हैं। (यम स्मृति) सायं संध्या से दिन के पाप नष्ट होते है और प्रातः सन्ध्या से रात्रि के जो व्यक्ति सन्ध्या कर्म का लोप नहीं करता, उसको बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के दोष नहीं प्राप्त होते।

तं दोषा नीय सर्पन्ति गरुमन्त मिवोरणाः (कात्यायन)

जैसे गरुड़ के पास सर्प नहीं आते।

सन्ध्याहीन द्विज अपवित्र होता है। उसका किसी भी द्विजकर्म में अधिकार नहीं है। वह जो भी कुछ दूसरा कर्म करता है उसका फल भी उसे नहीं मिलता।

यदन्मत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाग भवेत्। (दक्ष स्मृति)

सन्ध्या स्थान

संध्या के लिए उत्तम देश और काल - संध्या के लिए वही स्थान उपयोगी है,जो स्वभावतः पवित्र और एकान्त हो। एकान्त स्थान एकाग्रता में सहायक होता है। पवित्र स्थान मन में पवित्रता लाता है। शास्त्रों में संध्या के लिए निम्नांकित स्थानों का निर्देश किया गया है। पुण्य क्षेत्र, नदी का तट, पर्वतों की गुफा, शिखर, तीर्थस्थान, नदी संगम, पवित्र जलाशय, एकान्त बगीचा, बिल्ववृक्ष के नीचे, पर्वत की उपत्यका, देवमंदिर, समुद्र तट और अपना घर

संध्या समय

प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व और सायं काल सूर्यास्त से पहले सन्ध्या के लिए उत्तम समय है।

अर्थात दिन-रात की संधी में सन्ध्योपासना उत्तम हो।

स्मृति में कहा जाता है -

उत्तमा तारकोपेता, मध्यमा लुप्ततारका

अधमा सूर्यसहिता प्रातः संध्या त्रिधास्मृता (मनु)

अर्थात - सूर्योदय के पूर्व जब तारे दिखाई देते है वह उत्तमकाल, तारों के छिपने से लेकर सूर्योदय काल तक मध्यम, सूर्योदय के पश्चात अधम काल माना गया है।

प्रातः सन्ध्या में सूर्योदय के पश्चात दो घड़ी तक गौणोत्तम काल माना गया है और सायं सन्ध्या में सूर्यास्त के तीन घड़ी बाद तक गौणोत्तम काल है। इसी तरह प्रातःकाल सूर्योदय के बाद और सायंकाल सूर्यास्त के बाद चार घड़ी तक गौण मध्यमकाल माना गया है। गौण मध्यमकाल तक सन्ध्या हो जाए तो काल कोप के लिए प्रायश्चित नहीं करना पड़ता है। इसमें अधिक देर होने पर कालातिक्रमण का प्रायश्चित करना चाहिए। प्रायश्चित में मंत्र सहित एक विशेष अर्ध्य देना चाहिए। मघ्यान्ह सन्धया भोजन के पहले ही की जाना चाहिए।

दिशा विचार

स्मृतियों के अनेक वचनों का समन्वय करके तीनों काल की सन्ध्या पूर्वभिमुख होकर करना चाहिए। सारांश यह कि प्रातः सन्ध्या का समस्त कार्य पूर्वाभिमुख,मघ्यान्ह और सायं सन्ध्या में अर्ध्य, उपस्थान और जप सूर्य किस दिशा में उदय हो उधर मुंह करके करे। दक्षिण और पश्चिम की ओर मुंह करके आचमन नहीं करना चाहिए।

शौच में सन्ध्या

जनना शौच अथवा मरणा शौच में मंत्र का उच्चारण किए बिना ही प्राणायम करना चाहिए तथा मार्जन मंत्रों का मन ही मन उच्चारण करते हुए मार्जन कर लेना चाहिए। गायत्री का स्पष्ट उच्चारण करके सूर्य को अर्ध्य दे। मार्जन करे या न करे। परंतु उपस्थान तो नहीं ही करना चाहिए।

सूतके मृतके वापि प्राणायामम मंद्रकम्
तथा मार्जन मंत्रास्तु मनमोच्चार्य मार्जयेत्।।
गायत्री सम्यगुच्यवार्य सूर्यामार्घ्य निवदयेत्
मार्जनं तु न वा कार्य मुपास्थाने न चैव हि।।

(आन्हिक सूत्रावली)

उपसंहार

समग्र सार यही है कि द्विज मात्र के लिए सन्ध्या कर्म आवश्यक है। शास्त्र के सभी नियमों के पालन करना यद्यपि कठिन है पर सभी पसिस्थिति में संध्या आवश्यक कर्म है। यही हमारा बल है। यही हमारी ब्राह्मण होने की पहचान है। किं बहुना?

-नलिन शंभुप्रसादजी शास्त्री (भट्ट)
दाहोद 9898463282

माँ गायत्री का साक्षात्कार करने वाले हमारे समाज के गायत्री के परम उपासक

गायत्री परमोपासक : डॉ. रविशंकर राणा

ब्राह्मण के लिए वेद पिता और गायत्री माता है। सभी ब्राह्मण कुल उत्पन्न के लिए न्यूनतम सात गायत्री माला नित्य करना अत्यावश्क कहा गया है। यहां यह स्पष्ट किया जाना भी प्रासंगिक है, कि नारी मात्र के लिए चाहे वे कुमारी हो या सौभाग्यवती, या विधवा, सभी के लिए गायत्री मंत्र का उच्चारण निषिद्ध किया गया है।

इस वर्जना के पीछे कई कारण है। यथा - स्त्री का रजस्वला होना, स्त्री का ब्रह्मचर्य खंडित होना इत्यादि। पर इसके अतिरिक्त एक वैज्ञानिक कारण यह भी है कि गायत्री मंत्र के उच्चारण से स्त्री के गर्भाशय पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। यह भी मान्यता है कि नारी द्वारा गायत्री मंत्र का जाप करने से दरिद्रता आती है। पर हर ब्रह्मपुत्र के लिए गायत्री जप एक वैदिक आग्रह भी है और आदेश भी।

बहरहाल आज हम आपको एक बिरले गायत्री के परम साधक से परिचित कराते है। यदि हम अतीत के गवाक्ष से दृष्टिपात करें तो डॉ. रविशंकर लक्ष्मीराम राणा (खरगोन) अपने शहर के सुप्रतिष्ठित और ख्यातनाम चिकित्सक थे। आपकी प्रतिदिन दिनचर्या ब्रह्ममुहूर्त प्रात: 4 से 7 बजे तक नित्य प्रात: संध्या, बली वैश्वदेव और गायत्री जप से ही शुरु होती थी। आप एलोपैथी चिकित्सा पद्धति के साथ-साथ अपने रोगियों को रोगमुक्त करने के लिए धार्मिक उपचार भी किया करते थे और उसका मार्गदर्शन भी देते थे। आपकी नित्य पूजा और जप के पुण्य प्रताप का यह चमत्कार था कि एक बार स्थानीय पंडित पुरुषोत्तम जी उपाध्याय जलंधर रोग से पीड़ित हो गए थे। लंबे उपचार के बाद भी जब पंडित उपाध्याय पर दवाईयां निष्प्रभावी होने लगी, तो डॉ. राणा ने उन्हें अपने नित्य बली वैश्वदेव की भस्म देकर रोज एक चुटकी खाली पेट खाने को कहा और एक पखवाड़े में ही पंडित उपाध्याय बली वैश्वदेव की भस्म से रोग मुक्त हो गए।

ऐसे परम साधक डॉ. राणा को आज से 71 वर्ष पूर्व कार्तिक सुदी चतुर्थी संवत 2008 तदनुसार सन 1965 को ब्रह्ममुहूर्त में गायत्री जप के दौरान वेद माता गायत्री के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। मां गायत्री से साक्षात्कार के हर्षातिरेक में उन्होंने अपने सभी भाईयों और परिजनों को तत्काल सोते से उठाया और यह घटना सविस्तार बताई। फिर वे खुशी-खुशी अपने क्लिनिक में आए, कुछ ही देर बाद वे एक मरीज को देखने उसके घर गए। उसे देखा, दवाईयां लिखी फिर हरिओम तत्सत बोलते हुए वे उठे और अनायास गिर पड़े और चिर निंद्रा में लीन हो गए। इस परम गायत्री साधक की सफल साधना से सकल आभ्यंतर औदुम्बर समाज गौरवान्वित है और अपने इस गायत्री परमोपासक तथा गौरव पुरुष को शत् शत् वंदन करता है।

राकेश राणा
(जैसा कि गजेन्द्र प्रसाद गोपालकृष्ण राणा ने बताया)

गायत्री मंत्र लेखन साधक : सुरेन्द्र पण्डया

ब्राह्मण का समूचा ब्राह्मण्त्व केवल गायत्री साधना पर ही निर्भर है जो लौकिक प्रयत्न से अलभ्य हो वह गायत्री साधना से सुलभ है। गायत्री मंत्र रोग और शत्रु पर विजय दिलाता है। इसलिए गंगा, गीता, गायत्री, गाय और गोविंद हिंदू धर्म के यह पांच प्रमुख केन्द्र है और गायत्री तंत्र में उल्लेख है कि ब्राह्मण को तीन प्रणव युक्त, क्षत्रिय को दो प्रणव युक्त और वेश्य को एक प्रणव युक्त गायत्री मंत्र जपना चाहिए। मंत्र जाप बिना होंठ हिलाए किया जाना चाहिए। गायत्री मंत्र का जाप जीवन के लिए कल्याणकारी है। गायत्री पूर्ण पुरश्चरण 24 लाख मंत्र जाप का होता है। गायत्री उपासना में हर साधक को यह सुविधा भी दी गई है कि माला से मंत्र जाप करे या मंत्र लेखन करें। यह दोनों समुतल्य है।

गायत्री मंत्र लेखन द्वारा गायत्री का पूर्ण पुरश्चरण करने वाले परम ज्येष्ठ साधक 83 वर्षीय श्री सुरेन्द्र कुमार मुकुंदराम पण्डया (खरगोन) दो पूर्ण पुरश्चरण कर चुके है, तीसरा पूर्ण पुरश्चरण अंतिम चरण में है। श्री पण्डया विद्ववत कर्मकांडी ज्योतिष और ब्रह्म संस्कृति के वृहद ज्ञान से वेष्ठित है। सभी यम नियम के साथ लाल स्याही से आप प्रतिदिन नियमित और नियमानुसार मंत्र लेखन करते है। यह क्रम अभी तक निर्बाध जारी है। कलश परिवार श्री पण्डया जी की अप्रतिम साधना की हृदय द्वार से हार्दिक प्रशंसा करते हुए यह मंगल कामना करता है, कि आपकी इस गायत्री साधना से आपके परिवार के साथ-साथ समग्र औदुम्बर समाज भी लाभान्वित होगा।

राकेश राणा

उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक संस्कृत साहित्य के नामचीन महाकवि कालीदास की उत्कृष्ट विशेषताओं से अलंकृत लेख लिख रहे हैं हमारे युवा संस्कृताचार्य श्री अभिषेकजी उपाध्याय।

प्र.सं.

<u>સાર્વભૌમિકમહાકવિકાલિદાસ</u>

મહાકવિકાલિદાસ!સંસ્કૃત સાહિત્ય જગતનાતપતા સૂર્ય સમાન તેજસ્વીમહાકવિવિશેકશુંકહેવુંકેલખવુંએ મારાંજેવાસામાન્યવ્યક્તિનુંગજું નથી. છતાંતેમનાવિશેકંઇકલખવાનોઅવસરમળ્યોએજમારુંસદભાગ્યમાનીપ્રયત્નકરુંછું.

સંસ્કૃતભાષાનેમૃતભાષાકહેનારાલોકોનેમુતોડજવાબએજકાલિદાસ. વિશ્વનાસાહિત્યરૂપીઆકાશમાંકાલિદાસનીપ્રતિભાવાનતેજસ્વીતાઆગળટકીશકેએવોકોઇ તારોનથી !

पुरा कवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः ।

अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावात् अनामिका सार्थवती बभूव ॥

ભાવાર્થ:- પ્રાચીન કાળમાંસારાકવિઓની ગણનાકરવામાંઆવીત્યારેયાદીમાં શ્રેષ્ઠ હોવાને કારણે કાલિદાસનું નામ કનિષ્ઠિકા(ટચલીઆંગળી) પર આવતું હતું, પરંતુ આજ સુધી તેમના સમકક્ષ કવિ ન હોવાને કારણે કોઈનું નામ અનામિકામાં આવી શક્યું નથી અને તેથી અનામિકાનું (નામવિનાની)નામ સાર્થક થયું.

“અભિજ્ઞાનશાકુન્તલ” દ્વારાવિશ્વનાસાહિત્યમાંભારતનીસંસ્કૃતિનેકાલિદાસેસર્વશ્રેષ્ઠસ્થાનઅપાવ્યુંછેએમાંકોઇશંકા નેસ્થાનનથી.કાલિદાસઉજ્જૈનનામહારાજાવિક્રમાદિત્યનાદરબારનાનવરત્નોમાંનાએકહ તા. કાલિદાસનેલીધેજઉજ્જૈનનોદરબારસાહિત્યનીચર્ચાઓમાંદેશભરમાંઅગ્રેસરહતો.

કવિનાજન્મસમયઅનેજીવનપરિચયકરતાંપણકૃતિઓઅનેશૈલીનું મહત્વવધારેહોયછેપરંતુકાલિદાસજીનાવિષયમાંથોડુંજુદુંછે.

એમનુંજીવનકવનજસાહિત્યજગતમાટેએકઉદાહરણરૂપસાબિતથયુંછેમાટેએજાણવુંઆવ શ્યકબનીજાયછે.

કાલિદાસનોજન્મઇ.સ.પૂર્વે૧૫૦થીઇ.સ.૬૩૪નીઅંદરથયોહોવાનુંમાનવામાંઆવે છે.પ્રચલિતદંતકથાપ્રમાણેકવિકાલિદાસબાળપણમાંસાવમૂર્ખહતાં. એટલામૂર્ખકેપોતેજેડાળીપરબેઠાહોયએનેજકુહાડીવડેકાપતા.તેઓજેરાજ્યમાંરહેતાત્યાંના રાજાનીરાજકુમારી "વિદ્યોત્તમા" નેપોતાનાજ્ઞાનનોભારેઘમંડહતો. વૈદિકઅનેઆધ્યાત્મિકચર્ચાઓમાંકોઇતેણી નેપરાસ્તકરીનહોતુંશકતું. વિદ્યોત્તમાપરણવાલાયકથતાંરાજાએતેનેવિવાહમાટેકહ્યુંત્યારેઘમંડીવિદ્યોત્તમાએશરતમુ કીકે, મનેશાસ્ત્રાર્થમાંજેહરાવીશકશેએનીસાથેજહુંલગ્નકરીશ. ઘણાંબધાંરાજકુંવરોઆવીગયાઅનેહારીનેપાછાગયા. વિદ્યોત્તમાશાસ્ત્રોમાંપારંગતહતી, તેનેહરાવવીએનાનીસુનીવાતનોહતી. આમનેઆમદિવસોવીતવાલાગ્યાં. એકવખતરાજાનોમંત્રીરાજાનાકહેવાથીવિદ્યોત્તમાનેહરાવીશકેએવાકોઇમેધાવીયુવાનની શોધમાંનીકળ્યો.

હવેબનેલુંએવુંકે,મંત્રીનેવિદ્યોત્તમાએકોઇકારણોસરભરદરબારમાંઅપમાનિતકરેલો. એટલેમંત્રીવિદ્યોત્તમાપરઅકળાયેલોહતોઅનેબદલોલેવાનીતકશોધતોહતો.ફરતાંફરતાંતે મણેજોયુંતોએકમુંછનોદોરોહજીમાંડફુટ્યોછેએવોજુવાનવૃક્ષપરચડ્યોહતોઅનેપોતેજેડાળ પરબેઠોહતોએજડાળનેપાછળથીકુહાડીવડેકાપતોહતો ! મંત્રીએઆજોયુંઅનેયુવાનનેઆમનકરવાસમજાવ્યુંપણયુવાનતોબમણાંજોરથીઘાકરતોગ યો. અંતેડાળભાંગીઅનેતેભેગોયુવાનજમીનપરપટકાયો. આયુવાનએટલેકાલિદાસ...મંત્રીનેવિદ્યોત્તમાનેપાઠભણાવવાનીયુક્તિમળીગઇ. તેકાલિદાસનેરાજદરબારમાંલઇગયો. ત્યાંવિદ્યોત્તમાઅનેકાલિદાસવિશે "શાસ્ત્રાર્થ" શરૂથયો.

હવેકાળાઅક્ષરકુહાડેમારનારકાલિદાસનેઆધ્યાત્મનાગહનઅર્થોનીવળીશીખબરહોય ?

પણવિદ્યોત્તમાનીશરતપ્રમાણેઆગોષ્ઠિમુંગારહીનેમાત્રઇશારાવડેકરવાનીહતી.વિદ્યોત્તમા હાથનો પંજો આગળ છે અને પાંચ આંગળીઓ બતાવે છે. જેનો અર્થ થાય કે,ઇન્દ્રીયો પાંચ છે.આ બાજુ વિદ્યોત્તમાનો ઉગામેલો પંજો જોઇ કાલિદાસ સમજે છે કે, આ મને થપ્પડ મારવા માંગે છે.એનાપ્રતિઉત્તરમાંકાલિદાસહાથની મુઠ્ઠી બતાવે છે. અર્થાત્ તું મને થપ્પડ મારીશ તો હું મુક્કો મારીશ. વિદ્યોત્તમા અચંબિત બની જાય છે કે,આ યુવાન તો મહારથી લાગે છે. કારણ કે કાલિદાસનો મુક્કો જોઇ વિદ્યત્તમા સમજે છે કે, એ મુક્કાથી કહેવા માંગે છે કે ઇન્દ્રીયો ભલે પાંચ હોય પણ એને એક મનથી કાબુ કરી શકાય,સંગઠીત કરી શકાય !વિદ્યોત્તમા પોતાની હાર સ્વીકાર કરે છે. કાલિદાસ સાથે તેમના લગ્ન થાય છે. પણ એ પછી સાસરીયે આવ્યા બાદ વિદ્યોત્તમાને ખબર પડે છે કે જેનેપરણી નેઆવીછેએ યુવાનવિદ્વાનનહિઓનમૂર્ખછે. શાસ્ત્રચર્ચામાં તોએ યોગાનુયોગ સાચો પડી ગયો હતો. તેણીકાલિદાસ પર ફિટકાર વર્ષાવે છે અને મહેણાં મારે છે. વિદ્યોત્તમાના કઠોરવચનોકાલિદાસ સહન કરી શકતા નથી. તેઓ એ જ વખતે ગૃહત્યાગ કરે છે.ગાઢ જંગલમાં આવી કાલીમાતાના મંદિરમાં જઇ ઘોર તપશ્ચર્યા કરે છે. કાલિદાસના તપથી કાલીમાતા પ્રસન્ન થઇ કાલિદાસને મેધાવી થવાનું અને વિદ્યા પર વર્ચસ્વ ધરાવવાનું વરદાન આપે છે.ઘરે આવીને કાલિદાસે ઘરનું બારણું ઠોક્યું અને કહ્યું–“**कपाटम्उद्घाटयसुंदरी**” । દરવાજો ઉઘાડો,સુંદરી. વિદ્યત્તમા આવી રોચક વાણી સાંભળીને ચકિત થઇ ગઇ. તેણી એવળતાજવાબમાંકહ્યું–“**अस्तिकश्चित्वाग्विशेषः**”આ વાક્યનોવિદ્વાનોબેપ્રકારેઅર્થકરેછે. ૧. કોઈવિદ્વાનવ્યક્તિઘરનાબારણેઆવ્યોલાગેછે. ૨. તમારીવાણીનીકંઇકવિશેષતાછે ?

કિંવદંતીમુજબકહેવાયછેકે, વિદ્યોત્તમા દ્વારા બોલાયેલા આ ત્રણ શબ્દો પર કાલિદાસે સદાય અમર રહેલા ત્રણ કાવ્યો રચ્યાં – કુમારસંભવમ્,મેઘદુતમ્ અને રઘુવંશમ્ ! વિદ્યત્તમાએ બોલેલા ત્રણ શબ્દોમાંથી એક-એક શબ્દ દ્વારા એક એક મહાકાવ્યનો આરંભ થાય છે.

अस्तिथी“अस्त्युत्तरश्यामदिशि...” = કુમારસંભવમહાકાવ્યનોપ્રારંભ

कश्चित्‌थी“कश्चित्कांता....” મેઘદૂતખંડકાવ્યનો પ્રારંભ

वाग्विषेशःथी“वागार्थविव....”રઘુવંશમહાકાવ્યનોપ્રારંભકર્યો.

કાલિદાસે બે મહાકાવ્યો – કુમારસંભવમ્ અને રઘુવંશમ્,બે ખંડ કાવ્યોઋતુસંહારમ્, મેઘદુતમ્ અને ત્રણ નાટકો માલવિકાગ્નિમિત્રમ્, અભિજ્ઞાનશાકુંન્તલમ્ અને વિક્રમોર્વશીયમ્નું સર્જન કરીને સંસ્કૃત સાહિત્યને જાણે પરીપૂર્ણ બનાવ્યું.

કાલિદાસની રચનાઓ અમરત્વનેપામીછે તેનું કારણ કાલિદાસની લેખનશક્તિમાં રહેલી તાકાત છે.**उपमाकाालिदासस्य**અર્થાત્કાલિદાસ જેવી ઉપમા કોઇ આપી શકે નહિ એ વાત તો જાણીતી છેજ.રઘુવંશમહાકાવ્યમાંનંદિનીધેનુનેસંધ્યાની ઉપમાઆપતોએકસુપ્રસિધ્ધશ્લોકકાલિદાસનાઉપમાસામર્થ્યનાસુચારુદર્શનકરાવેછે.

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्‌गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव संध्या ।।(रघु. २/२०)

ભાવાર્થ:- ઘરે આવીને, તે નંદિની ગાય દિવસ-રાતની વચ્ચે પ્રવેશતા ઓચર-રંગના સૂર્યાસ્તની જેમ ચમકી રહી હતી, રાજા દિલીપતેની પાછળ ચાલતાહતા, તેની પત્ની રાણી તેને આગળ આવકારતી હતી, તે બંને વચ્ચે ચાલતા હતા.

વળી,રસનિરૂપણમાં પણ કાલિદાસને પહોંચી શકવાનુંપણસામર્થ્યકોઈનુંનથી. મુખ્યત્વે કાલિદાસે પોતાની રચનાઓમાં “શૃંગાર રસ” પ્રયોજ્યો હોવા છતાં તેણે નૈતિક જીવનનાં મુલ્યો અખંડ રાખ્યાં છે.

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम ।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं न
जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः ॥(अभि.शा. २/१०)

ભાવાર્થ:- આ શકુંતલા એક સુગંધ વિનાનું ફૂલ છે, નખથી અસ્પૃશ્ય એક કળી છે, નિષ્કલંક રત્ન છે, અજાણ્યા સ્વાદવાળું તાજું મધ છે, અખંડ ગુણોનું નિષ્કલંક ફળ છે. આ ફળનો ભોગ કોણ બનશે તે ભગવાન જાણે છે.

વળી,પર્યાવરણીય ઘટનાઓ પણ કાલિદાસનીજેમ ભલાં કોણ વર્ણવી શકે?

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चाकतस्ते सगन्ध:।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमाला:
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाका:।।(मेघ.पू. ९)

ભાવાર્થ:- સાનુકૂળ પવન તમને ધીરે ધીરે ખસેડી રહ્યો છે.તમારીડાબીબાજુઆવીનેચાતકપક્ષીમધુરટહુકારકરીરહ્યુંછે. ગર્ભાધાન ઉજવણી કરવાની પ્રથામાંપક્ષીઓઆકાશમાં પંક્તિ સહવિવિધઆકારબનાવીરહ્યાછેઆદ્રશ્ય તમારીનજીકપોહચીઆપનીઆંખોનેચોક્કસખુશકરશે.

રસનિરૂપણ, ઉપમા, છંદ, અલંકાર એ બધી રીતે કાલિદાસની રચનઓ બેજોડ છે.એમાંયે “અભિજ્ઞાનશાકુન્તલ” તોઅદ્વિતીયજ છે. જર્મન કવિ ગેટ આ પુસ્તકને માથે લઇને નાચ્યાહતા. વિશ્વની અંગ્રેજી, જર્મનથી માંડીને લગભગ બધી ભાષાઓમાં આ નાટકના અનુવાદો થઇ ચુક્યા છે. કહેવાય છે કે..

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽकस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्॥

એટલે કે કાવ્યોમાં નાટક એ સહુથી સુંદર રૂપ છે તો એમ જ નાટકોમાં શાકુન્તલ એ સહુથી સુંદર છે. તેમાં પણચોથોઅંકઅનેચારવિવિધરસધરાવતાચારશ્લોકોકાલિદાસનાશ્રેષ્ઠત્વનેચિત્રિતકરેછે.

એક વખત માતા સરસ્વતી પાસે કાલિદાસ, માઘ અને દંડી જેવા કવિઓ જાય છે અને પ્રશ્ન કરે છે કે – અમારા બધાંમાંથી શ્રેષ્ઠ કોણ ?માં સરસ્વતી જવાબ આપે છે – "**कविर्दंदण्डिःकविर्दंदण्डिःकविर्दंदण्डिर्नसंशयः**"આ સાંભળીનેનિરાશ થયેલ કાલિદાસ પ્રશ્ન કરે છે કે, તો હું કોણ ? ત્યારે સરસ્વતી દેવી કાલિદાસને કહે છે –**"त्वमेवाहं त्वमेवाहं त्वमेवाहं न संशयः**"કવિ દંડી તો કવિઓમાં શ્રેષ્ઠ છે. તું તો મારો જ અવતાર છે

કાલિદાસને સમગ્રતાના મહાકવિ તરીકે બિરદાવવામાં આવે છે. તેણે ભારતીય જનજીવન અને સંસ્કૃતિને નવીન દર્શન અને વાચા આપી છે. તેની કૃતિઓનું ઝીણવટથી પરિશીલન કરતાં જણાશે કે જન્મથી આરંભી મરણ સુધીનો જીવનનો એક પણ પ્રસંગ એવો નથી કે જેનું વર્ણન એણે એની કૃતિમાં ન કર્યું હોય. બીજી બાજુ માનવીના મનનો એ સાક્ષી છે. બબ્બે હજાર વર્ષનાં વહાણાં વાયાં હોવા છતાં બાળક કે વૃદ્ધ, યુવક કે યુવતી. રાજા કે ઋષિના વર્તન કે વર્ણનમાં જે ભાવો એણે ભર્યા છે તે આજે પણ તેવા ને તેવા જ જણાય છે. આથી કહેવાય છે કે તેણે જીવનને સ્થિરતાપૂર્વક અને પૂર્ણતાથી જોયું હતું. આ એક અદ્વિતીય બાબત છે. અને જે કંઈ અદ્વિતીય હોય તે પરબ્રહ્મની જેમ વિશ્વવ્યાપી હોય એ ન્યાયે કાલિદાસ સાહિત્યક્ષેત્રે વિશ્વવ્યાપી છે.

સર્વોત્તમ કૃતિ છેલ્લી જ હોય તેવું માનવાને કોઈ બૌદ્ધિક આધાર નથી. ઘણા લેખકોની ઉત્તમ કૃતિ વહેલી હોય અને નબળી કૃતિ છેલ્લી હોય તેવું પણ બન્યું છે.

(૧) ઋતુસંહાર (૨) માલવિકાગ્નિમિત્ર (૩) વિક્રમોર્વશીયમ્ (૪) મેઘદૂત (૫) કુમારસંભવ (૬) અભિજ્ઞાનશાકુન્તલ (૭) રઘુવંશ. કેટલાંક કુમારસંભવ અપૂર્ણ હોવાથી છેલ્લું હોયએવુંમાને છે.

તત્ત્વમાં પરબ્રહ્મમાં બધાં જ દ્વન્દ્વો એક થઈ જાય છે. કાલિદાસની કૃતિમાં અનેક વિરોધાભાસોનો એકમાં સમન્વય થઈ જાય છે. પછી આપણે આ સમગ્રતાના કવિને કોઈક શાસ્ત્રની વ્યાખ્યામાં બાંધીને ચકાસીએ છીએ. આપણો માનદંડ નાનો હોવાથી તેના સર્જનમાં આપણને એટલું જ દેખાય છે. કોઈ તેને વ્યાકરણના સિદ્ધાન્તોથી માપે છેકોઈક અને ક્યારેક તો મતભેદમાંથી મનભેદ પણ સર્જાય તેવી ભૂમિકાઓ રચવામાં રાચે છે. પણ આ 'સમ્રગતાના કવિ'ને સમજવા માટે અલ્પાત્મા અલ્પ શાસ્ત્રોના જ્ઞાતા કે વિચારોના વર્તુળમાં જકડાયેલા આપણા માનદંડો હંમેશ ટૂંકા પડ્યા છે અને પડવાના છે. અલબત્ત, આનો અર્થ એ નથી કે તેની કૃતિઓનું જુદા જુદા દૃષ્ટિકોણથી અધ્યયન ન કરવું. પણ એકાદ દૃષ્ટિકોણથી આપણે એને માપી લીધો એવો સંતોષ આપણી જ્ઞાનપિપાસાનો વિઘાતક બને છે. કાલિદાસના સર્જનની વિશેષતા તેના જીવનદર્શનની સમગ્રતામાં રહેલી છે. આવા સમગ્રતાનાસાર્વભૌમિકકવિને વારંવાર પ્રણામ.

***

-અભિષેકએ. ઉપાધ્યાય- સુરત
Mob. 9726556339

स्वस्फूर्त काव्य

संतोष है प्रतिशोध नही।
हार है वहां क्रोध नहीं।
मुश्किल राहों पे चलना है ।
थकावट है बोझ नहीं।
हमें कौन बतलाएगा।
तूफानों का शोर नहीं।
नही कुछ भी पास नहीं।
हम ही है बस और नही

स्वीकार कर तो ताकत है।
बिना इजाजत प्रवेश नहीं।
गलतियों का ये दौर है।
तारीफों के चोर नहीं।
पहचानो सब छिप जायेगा।
मनन है पर उनके बोल नही।

मनन भट्ट, दाहोद
9408891777

– कर्नाटक संगीत से ली गई मधुर राग 'हंसध्वनि' के विस्तृत विवरण के साथ इंदौर घराने की अमीर खा साहब की अमीर खुसरो द्वारा रचित फारसी रुबाई का विवेचन सुंदर तरीके से किया है हमारे युवा संगीत समीक्षक श्रीवत्स शास्त्री

(प्र.स.)

रागो की छटा - "राग हंसध्वनि"

एतिहाद-ए-ईसमियान-ए-मन-ओ-तू ,,

मन-ओ-तू-ए-ईसमियान-ए-मन-ओ-तू ||

इंदौर घराने के जाने-माने मशहूर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के गायक- उस्ताद अमीर खां साब द्वारा गायी गयी, हसरत अमीर खुसरो द्वारा फ़ारसी भाषा में लिखी गयी, **"राग हंसध्वनि"** में ये एक मीठी-सी रुबाई हैं|

इसका शब्दानुसार अर्थ कुछ इस प्रकार हैं-

एतिहाद : एका (Oneness/Unification)

ईसमियान-ए-मन-ओ-तू : हमारे बीच/तेरे-मेरे बीच (Between us/Between you and me)

रुबाई का हम अगर अर्थ समझे तो क्या खूबसूरत वर्णन हैं कि; तुम-तुम नहीं हो, मैं-मैं नहीं हूं, हम सब एक हैं, हमारे सब के मन एक है, आचार और विचार एक हैं| हम सब में अब कोई भेद नहीं हैं| हम सभी भेद- जैसे, लिंग, जाती, रंग, रूप, अन्य सभी भेदो से ऊपर उठ कर वस्तुतः जीवन के सार को समझने का प्रयास कर रहे है| हम सभी शारीरिक विशेषताओं से परे जा कर आत्मा के सौंदर्य को समझने का प्रयास कर रहे हैं| हम सब शिव हैं, क्युकी अब हम में और उस में भी कोई अंतर नहीं रहा| हमने यह भलीभाती जान लिया कि सत्य तो सिर्फ शिव हैं जो की अपार अलौकिक सौंदर्य से परिपूर्ण हैं **(सत्यम् शिवम् सुंदरम्)**| और जो हैं, सिर्फ वो ही हैं| ना ही उसके आगे कुछ हैं और ना ही उसके पीछे कुछ|

सरल भाषा में कहा जाए तो हम सभी उस परम-चैतन्य तत्व, जिसे हम परमात्मा के नाम से जानते है, उसी के हम सब आत्मा-रुपी अंश हैं| और उसी के अंश होने की वजह से किसी में अब भेद या अंतर करना तो असंभव हैं|

मुन तू शुदाम तू मुन शुदी,

मुन तुन शुदाम तू जान शुदी।

ताकास न गोयद बाद अज़ीं,

मुन दीगाराम तू दीगारी।

- हज़रत अमीर खुसरो

मैं तुम बन गया, और तुम मैं,

मैं शरीर, तुम आत्मा;

ताकि भविष्य में कोई यह न कह सके

कि तुम कोई और हो, और मैं कोई और।

इस विषय के सन्दर्भ में भगवान श्री आदि शंकराचार्य जी ने अपने **निर्वाणाष्टकम्** स्तोत्र में भी अद्भुत वर्णन किया हैं| उन्होंने स्तोत्र में "मैं कौन हूँ? (इंसान कौन हैं?)", इसका वर्णन किया हैं| और जो कुछ भी है वो शिव (आत्मा) ही हैं, यह बताया हैं| अंत से अनंत तक सिर्फ शिव ही शिव हैं **(चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्)|**

प्रसिद्ध गुजराती कवी श्री शोभित देसाई जी ने इस विषय पे अपने विचार कुछ इस प्रकार प्रकट किये हैं-

હું જ છું પાતાળમાં ને કહેકશાંમાં હું જ છું,

ભાન પણ છું હું જ, નવરંગી નશામાં હું જ છું;

હું છું એવા ભ્રમને હું ભૂંસી રહ્યો છું ક્યારનો,

હું નથી એ નામની અંતિમ દશામાં હું જ છું.

- શોભિત દેસાઈ

यूँ तो, भगवान को पाने के 3 रास्ते **श्रीमद्भगवद्गीता** में बताए गए हैं। इनमें पहला है कर्म योग। दूसरा ज्ञान और तीसरा भक्ति योग। भगवान श्रीकृष्ण जब अर्जुन को इन तीनों तरीके के बारे मे बताते हैं तब अर्जुन कहते हैं कि वे इन तीनों रास्तों पर नहीं चल पाएंगे। तब भगवान कहते हैं कि चौथा और सबसे आसान तरीका है शरणागति, लेकिन इसके लिए आपको "मैं"

छोड़कर धर्म का होना पड़ेगा, तभी आप ईश्वर को पा सकोगे| तब अर्जुन ने चौथा रास्ता अपनाते हुये “मैं” को भूलाकर, अपने आप को “श्रीकृष्ण” को समर्पित किया|

तो यहाँ हमने एक रुबाई के माध्यम से इंसानो के बीच के अन्तर को मिटाने का प्रयास किया और यह भी जाना की हम सब शिव ही है,बस हमें सिर्फ चैतन्य होने की आवश्यकता हैं|

अब मैं इस विषय को एक उर्दू शेर के साथ यही समाप्त करते हुए, अपने मूल विषय **”राग हंसध्वनि”** के परिचय की ओर जाऊँगा-

मन-ओ-तू का हिजाब उठने न दे ऐ जान-ए-यकताई,

कहीं ऐसा न हो बन जाऊँ ख़ुद अपना तमन्नाई।।

-हफ़ीज़ होशियारपुरी

”राग हंसध्वनि परिचय”

हंसध्वनि (जिसका अर्थ है **"हंस की गुंजन"**)|

राग हंसध्वनि कनार्टक पद्धति का एक राग है जो आजकल उत्तर भारत मे भी काफी प्रचलित है। इसके थाट के विषय में दो मत हैं कुछ विद्वान इसे **बिलावल थाट** तो कुछ **कल्याण थाट** जन्य भी मानते हैं। इस राग में **मध्यम तथा धैवत स्वर वर्जित** हैं अत: इसकी जाति **औडव-औडव** मानी जाती है। **सभी शुद्ध स्वरों** के प्रयोग के साथ ही **पंचम रिषभ, रिषभ निषाद एवं षडज पंचम की स्वर संगतियाँ** बार बार प्रयुक्त होती हैं। इसके निकट के रागो में **राग शंकरा** का नाम लिया जाता है। गायन समय **रात्रि का प्रथम प्रहर** है।

हंसध्वनि का उपयोग हिंदुस्तानी संगीत में भी बड़े पैमाने पर किया जाता है और इसे कर्नाटक संगीत से उधार लिया गया है। इसे **कर्नाटक संगीतकार रामास्वामी दीक्षितार (1735-1817)** द्वारा बनाया गया था, **मुथुस्वामी दीक्षितार** (कर्नाटक संगीत की संगीत त्रिमूर्ति में से एक) के पिता, और **भेंडीबाजार घराने के अमन अली खान** द्वारा इसे हिंदुस्तानी संगीत में लाया गया था। यह **उस्ताद अमीर खां साब** के कारण लोकप्रिय हो गया है।

आरोह- सा रे ग प नि सां

अवरोह- सां नि प ग रे सा

पकड़- नि प ग रे, रे ग प रे सा

थाट- बिलावल

वादी-संवादी स्वर- प-सा

वर्जित स्वर- म-ध

जाति- ओडव-ओड़व

गायन का समय- रात्रि का प्रथम प्रहर (रात्रि 6-9 बजे)

यह **चंचल प्रकृति का उत्तरांग प्रधान राग** होते हुए भी इसका गायन समय दिन के पूर्वार्ध में हैं। अतः इसके वादी-संवादी और गायन के समय में विरोध हैं।

इसका **रिषभ** बड़ा महत्वपूर्ण है। गंधार का कण लेते हुए रिषभ पर रुकते हैं। आरोह में रिषभ अल्प हैं।

राग शंकरा इसके **बहुत समीप** है। **मुख्य अंतर** यह है कि **राग शंकरा मींड प्रधान गंभीर प्रकृति** का राग हैं और **राग हंसध्वानि चंचल प्रकृति का राग है।**

दूसरा, शंकरा राग में **धैवत प्रयोग** किया जाता है और **हंसध्वनि** में **धैवत वर्जित** है।

यूँ तो इसमें कई **तमिल,मलयालम और कर्नाटकी भाषा में गाने** बनाये गए है पर **हिंदुस्तानी बॉलीवुड फिल्मों** में इस राग का कम प्रयोग किया गया| लेकिन हाँ, जितने भी गाने बॉलीवुड संगीत में इस राग पर आधारित हैं बहुत ही **सुंदर और मिठास भरे** हैं|

राग हंसध्वानि पर आधारित हिंदुस्तानी बॉलीवुड फ़िल्मी गाने

गाना	**फिल्म का नाम**	**साल**	**गायक**	**कम्पोज़र**	**लेखक**
कजरारी	नौ बहार	1952	राजकुमारी	रोशन	शैलेन्द्र
मतवारी					
जा तोसे नहीं बोलू कन्हैयाँ	परिवार	1956	लता मंगेशकर मन्ना डे	सलिल चौधरी	शैलेन्द्र
ओ चाँद जहाँ वो	शारदा	1957	आशा भोसले लता मंगेशकर	सी. रामचंद्र	राजेंद्र किशन

ये चंद सुमधुर गाने हिंदुस्तानी बॉलीवुड के **राग हंसध्वनि** पर आधारित हैं|

अब हम अगली बार आपसे एक नए राग के साथ फिर मिलेंगे|

तब तक के लिए **गुनगुनाते रहिये- मुस्कुराते रहिये.....**

श्रीवत्स शास्त्री, इंदौर
9479964123

कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः

कवि शब्द ऋग्वेद से लेकर आज तक भारत के लोकजीवन में प्रचलित है !
उब्बट ने लिखा है कि कवि शब्द का अर्थ है **क्रान्तदर्शी ।**

यो अध्वराय परिणीयते कविः [ऋग्वेद सं .3 -217]
शतपथ में कहा गया

ये वै विद्वांसस्ते कवयः ! 67-1-44 8

कवि को मेधावी माना गया । कार्य-कारण को जानने वाला !
भारत के लोकमानस ने कवि का महत्व राजा से भी अधिक करके माना था ।

कस्माद्व्रजन्ति कवयःधनदुर्मदान्धान् ।
कवि को प्रजापति कहा गया कि वह विश्व में परिवर्तन ला सकता है

कविरेव प्रजापतिः,यथेदं रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते !
कवि की निरंकुशता को स्वीकार किया गया

निरंकुशाः कवयः !
आगे कवि राजदरबार की शोभा भी बने !
आगे चल कर कवि जब चाटुकारिता करके पेट-पालन से जुड़ा ,काव्य
तुकबन्दी बन गया ,तब कहा गया

काव्यालापांश्च वर्जयेत् ।
तुलसीदास ने कहा

कीन्हे प्राकृतजन गुनगाना , सिर धुनि गिरा लागि पछताना !

आगे चल कर
कितने ही कवि सत्ता की राजनीति के लिये
विचारधाराओं के प्रचारक की भूमिका में आ गये !
साहित्य के मानदंड सत्ता की परिक्रमा करने लगे ।

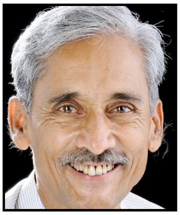

सामंत भट्ट
उदयपुर
7976952497

'लाख शृंगार करे कोई सादगी भी कयामत की अदा होती है'। हमारे समाज के वरिष्ठ व्यक्ति जिन्होंने सादा जीवन उच्च विचार को अपने जीवन में सार्थक किया है। ऐसे ही वरिष्ठ विदवत व्यक्ति के अंर्तवृत को खोलता हुआ हिरेन भाई जोशी द्वारा लिया गया प्रेरक साक्षात्कार।

(प्र.स.)

समाज के उर्जावान वरिष्ठ व्यक्तित्व

श्री सुरेशजी रणा दाहोद (Mob. 06355961133)

सागर को घट में भरकर अर्ध्य अर्पित करता हूँ
ऋषि पुत्र से जीवन को शब्द समर्पित करता हूँ

નાનપણથી જે વ્યક્તિ માટે માંના મુખથી સદા પ્રશંસા અને માતા-પિતાની આંખોમાં આદર, પ્રેમ અને અનુરાગ જોયું હોય એના જીવનને શબ્દાંકિત કરતી ફેરા મનનાં ભાવો ઉપર અંકુશ લગાવું એક કઠળ કાર્ય છે છતાં પણ આ સૌભાગ્યની વાત છે.

આપ સૌની સામે હું સમાજના એક એવાં વ્યક્તિનું જીવન પરિચય આપું છું જેનું જીવન આજની પેઢી માટે આદર્શ છે. 3 Idiots મુવી જોયાં પછી આપણે આ વિચાર આવ્યો હશે,

बेटा! कामयाब होने के लिए नहीं, क़ाबिल होने के लिए पढ़ाई करो, कामयाबी अपने आप पीछे भागेगी।

પણ આ વિચારનું મુવી રીલિઝ થી ચારથી પાંચ દશકા પહેલાં જેમને અનુસર કર્યું હતું એવા ભરદ્વાજ ગોત્રમાં ઉત્પન્ન થયા શ્રી નારાયણપ્રસાદ ગોપાલકૃષ્ણ રણા અને શ્રીમતી મણીબેન રણાનાં પુત્ર શ્રી સુરેશચંદ્ર નારાયણપ્રસાદ રણા

આદરણીય શ્રી સુરેશચંદ્ર નારાયણપ્રસાદ રણાનો જન્મ ફાલ્ગુન સુદ એકમ વિક્રમ સંવત ૧૯૯૭, અંગ્રેજી તારીખ 27 ફેબ્રુઆરી 1941 નાં રોજ દાહોદ શહેરમાં થયો હતો. એમને પ્રારંભિક શિક્ષા તથા તે સમયનું મેટ્રિક એટલે આજનું ૧૧મું ધોરણોનો અભ્યાસ દાહોદ શહેરમાં કર્યો. First Grade થી 1958માં મેટ્રિક પાસ થયા પછી એમને સુરતથી ઇન્ટર ઈન સાઇનસ અને સાથે સાથે ડિપ્લોમા ઈન સિવિલ એન્જિનિયરિંગ 1963માં કર્યું. ત્યારપછી સિવિલ એન્જિનિયર રીતે માહીડેમ, બાંસવાડામાં સુપરવાઈઝરની કારકિર્દી શરૂ કરી. પણ જેનાં હૃદયમાં આધ્યાત્મની જ્યોત સળગતી હોય, અને એનાં પ્રકાશથી જે સમાજને દિપ્તમાન કરવાનું સ્વપ્ન રાખતા હોય. જ્ઞાનનાં સાગરને શિક્ષા રૂપી નહરથી નાની-નાની પોખરોં સાથે જોડવાનું સ્વપ્ન જેમની આંખોમાં રમતું હોય, એમને ડેમનાં કામમાં આનન્દ કેવી રીતે મળે.

એજ સમયે એમના અન્તર્હૃદયમાં કવિ કલાપીની આ પંક્તિઓ ધડકન બનીને ધડકવા લાગી

નથી નથી મુજ તત્ત્વો વિશ્વથી મેળ લેતાં
હૃદય મમ ઘડાયું અન્ય કો વિશ્વ માટે!

તાત્પર્ય મારું મન આ કામમાં નથી લાગતું, હું બીજા કોઈ કામ માટે છું

આ વિચારથી એમને 1966માં **B.A.** અને 1968માં **B. Ed.** કરી નવજીવન ગર્લ્સ હાઈસ્કૂલ અધ્યાપક તરીકે કારકિર્દી શરૂ કરી. સાથે-સાથે એમને **A. M. in Gujarati and Sanskrut** કર્યું.

એમના આ સ્વપ્નમાં એમના પત્ની શ્રીમતી રાજેશ્વરી બેન પણ સહભાગી બન્યા અને એમને પણ શિક્ષિકા રૂપે કારકિર્દી નિભાવી. આપશ્રીના લગ્ન શ્રીવાસુદેવજી પંડ્યા અને શ્રીમતી ઇન્દુબેન પંડ્યાની પુત્રી રાજેશ્વરી બેન સાથે 5 મેં 1969નાં રોજ થયાં.

મૈં લેખનાં આરંભમાં ઋષિપુત્રથી સંબોધિત કર્યા છે. એનું કારણ માત્ર એજ છે કે ઋષિપુત્રોજ સમાજ માટે શિક્ષાનું મહત્વ સમજી શકે છે અને એનું વિસ્તાર કરી શકે છે. ઋષિઓ જ્ઞાન, દર્શનના શોધકર્તા રહ્યા છે પણ ઋષિપુત્રોએ એ જ્ઞાનનું પ્રચાર અને પ્રસાર કર્યું છે. સમાજને એની ઉપયોગિતા સમજાવી છે. શ્રીમદ્ ભાગવતનોં દાખલો લઈએ તો મહાઋષિ

વેદવ્યાસે શ્રીમદ્ ભાગવતનું સૃજન કર્યું પણ એનું વિસ્તાર એમનાં પુત્ર શુકદેવજી એ કર્યું.

સમાજ માટે શિક્ષણની મહત્વતા સમજી એને કારકિર્દી રૂપે સ્વીકાર કરીને સમર્પિત ભાવથી હજારો વિદ્યાર્થીઓ નાં જીવનનું નિર્માણ કર્યું છે. શિક્ષક રૂપે કાર્ય કરતા ગુજરાત રાજ્ય શાળા પાઠ્યપુસ્તક મંડળના સભ્ય તરીકે 11માં અને 12માં ધોરણની સંસ્કૃતનું પાઠ્યપુસ્તકનાં પ્રકાશનમાં સહભાગિતા નિભાવી. એ ઉપરાંત 10માં, 11માં, અને 12માં નાં ગુજરાતી પાઠ્યપુસ્તકનાં પરામર્શક રૂપે પણ કારકિર્દી નિભાવી.

શિક્ષણ ક્ષેત્રનાં વિકાસ માટે શિક્ષક રૂપે જ્ઞાનની સરિતાનો અવિરલ પ્રવાહ કરતા કરતા આર્થિક રીતે પણ મદદ કરી. દાહોદ ઔદુમ્બર કેળવણી મંડળમાં મંત્રી તરીકે કાર્ય કરતા બાળકોને નોટબુક નું દરવર્ષે વિતરણ કર્યું

સમાજમાં આધ્યાત્મિક ચેતના જાગૃત કરવા ભક્તિમય વિભિન્ન પુસ્તકોનું સંપાદન અને પ્રકાશન કર્યું.

1. સંધ્યા વંદન - બ્રાહ્મણો માટે સંધ્યોપસનની મહત્વતા સમજાવવાના સાથે સાથે સંધ્યા કર્મની વિધિ પણ છે

2. નારાયણ કવચ - નારાયણ કવચનો મૂલ પાઠ, સમશ્લોકી અને અનુવાદ છે

3. પ્રાર્થના પિયુષ - આ પુસ્તકમાં સંપાદક તરીકે કાર્ય કરતા, વિવિધ

સ્તોત્રનું સંકલન કર્યુ

4. ગીતે ગીતે ભાવાનુવાદ - ગીતા ઉપર વ્યાખ્યાન કરતું આ પુસ્તક

5. ભક્તિ નવનીત - વિભિન્ન સ્તોત્રનું સંકલન

વાર્તાલાપ કરતા મૈં જ્યારે પુછ્યું કે આપણી જ્ઞાતિના યુવાનોને કોઈ સંદેશ આપવા માગો છો ત્યારે એમને કહ્યું કે

"આપણે બ્રાહ્મણ છીયે, આપણે ઋષિ પુત્રો કહેવાઇએ છે. આપણે આપણું બ્રહ્મત્વ જાળવી રાખવું જોઈએ અને એના માટે નિયમિત સંધ્યોપાસન અને ગાયત્રી મંત્રનો જાપ કરવો જોઈએ. સાથે સાથે તમે જે પણ ભગવાનને માનતા હોય એનો એક પાઠ રોજ અવશ્ય કરવો. આપણા બાળકોને પણ રોજ એક એક શ્લોક શીખવાડવા અને એમને આપણી સંસ્કૃતિ માટે આદર પેદા કરવો જોઈએ. "

ઔદુમ્બર કેળવણી મંડળ માટે એમને વિચાર રજૂ કરતા કહ્યુ કે

"મંડળ સારું કામ કરે છે, પણ આવી પુસ્તકોનું પ્રકાશન વર્ષમાં ત્રણથી ચાર વખત થવું જોઈએ. અલગ અલગ ગામે દર વખત જવાબદારી લેવી જોઈએ. બાળકોને પણ લેખન માટે પ્રોત્સાહિત કરવા જોઈએ."

એમના જોડે વાત કરતા દિવ્ય આનંદની અનુભૂતિ થઈ. આવી વિલક્ષણ પ્રતિભા આપણી સમાજમાં છે આનાથી વધારે ગર્વની વાત શું થઇ શકે.

આદરણીય શ્રી સુરેશચંદ્ર રણાનું વ્યક્તિત્વ દરિયા જેવું વિશાળ છે અને મારી બુદ્ધિ ઘટ જેવી સીમિત. દરિયા રૂપી એમનાં વ્યક્તિત્વમાં થી જે જળ મારી બુદ્ધિ રૂપી ઘટમાં સમાયું એજ હું અભિવ્યક્ત કરું છું.

औदुम्बर कलश ब्यूरो के लिए
हिरेन जोशी 'अबोध'

In The Solution of crime Story The Forensic Science Place An Important Role In The Forensic Science How DNA Play Important Role Smartly Describe Our Young Forensic Science Expert

How DNA is Used In Solving Crime In Forensic Science

Forensic science is a branch of science what deals with the application of scientific method to examine evidence and investigate crimes. It includes a variety of branches such as, DNA and fingerprint analysis, wildlife forensics, and anthropology. Forensic scientists examine and analyses evidence from crime scene and elsewhere to develop objective findings that can assist in the investigation and prosecution of perpetrators of crimes or absolve an innocent person from suspicion.

How DNA can be used in solving crimes??? Generally, DNA means Deoxyribonucleic acid (DNA) plays a vital role in forensic science through exonerating the innocent and convicting the guilty. The genetic material in DNA allows the identification of the perpetrator by the processing and the analysis of biological evidence transferred in the crime scene.

Generally, the source of DNA is bloody fluid present in every individual. It can be blood, semen, saliva, hair, nails, etc. but this 3 are main source of DNA in body. Generally, at crime scene many evidence will be there it can be biological, chemicals, drugs, alcohol, ballistics, etc. In which using biological elements we can identify the sex of person whether male or female, Age of the person, time of the death, cause of the death etc.

The cases which is solved using biology is rape, murder, sec307, miscellaneous case, POCOS act(rape under 18 age of girl comes in this act) etc. DNA left at crime scenes, such as blood, hair, or saliva, can be analyzed. Comparing this evidence with known DNA samples can link a suspect to the crime or exclude innocent individuals.

Biological evidence plays a crucial role in forensic science for investigating and

Biological evidence plays a crucial role in forensic science for investigating and solving crimes. It includes various types of biological materials, such as blood, saliva, hair, semen, tissues, and other bodily fluids. The analysis of biological evidence can provide valuable information about the individuals involved in a crime, help establish a link between a suspect and a crime scene, and contribute to the overall understanding of a case. Here's how biological evidence is typically used in forensic science:

Collection of Biological Evidence:

- Forensic investigators collect biological evidence from crime scenes using proper techniques and tools to avoid contamination.
- Common types of biological evidence include bloodstains, hair, skin cells, saliva, semen, and other bodily fluids

Preservation and Packaging:

- Proper preservation of biological evidence is crucial to maintain its integrity for analysis.
- Packaging materials such as paper bags, breathable containers, or airtight envelopes are used to prevent degradation and mold growth.

DNA Analysis:

- DNA analysis is one of the most powerful tools in forensic science. It involves extracting DNA from biological samples and examining specific regions of the DNA for identification purposes.
- DNA profiling can match a suspect's DNA with biological evidence found at a crime scene, establishing a connection between the individual and the crime.

Bloodstain Pattern Analysis:

- Bloodstain pattern analysis helps reconstruct events at a crime scene. It considers the size, shape, and distribution of bloodstains to determine the direction and force of impact.
- This analysis can provide insights into the position of the victim and the assailant during an incident.

Serology (Body Fluid Analysis):

- Serology involves the identification and analysis of body fluids, such as blood, saliva, semen, and others.
- The analysis can determine the type of body fluid present, and in the case of blood, it can also establish the blood type.

Hair and Fiber Analysis:

- Hair and fiber analysis can help link a suspect to a crime scene or a victim. Microscopic examination can reveal similarities between hair or fibers found at the scene and those associated with a suspect.

Comparative Analysis:

- Forensic scientists use comparative analysis to match biological evidence found at a crime scene with known samples, such as a suspect's DNA or blood type.

The combination of these techniques allows forensic scientists to build a comprehensive picture of a crime and present reliable evidence in court. It's important to note that the interpretation of biological evidence requires expertise and adherence to strict forensic protocols to ensure accuracy and reliability in legal proceedings.

In summary, the importance of DNA in forensic science lies in its ability to provide accurate and reliable identification, resolve criminal cases, ensure justice, and contribute to humanitarian efforts during disasters or mass tragedies.

पुष्टि अमित कुमार शास्त्री
मोबा. 9099097690

'IOT' एक नवीन क्रांतिकारी तकनीक है जो हमारे नित्य जीवन में किस तरह उपयोगी है, इस बात को विस्तृत ढंग से अपने लेख के माध्यम से प्रकाश डाल रहे हैं हमारे युवा लेखक कन्हैया भट्ट।

(प्र.स.)

Internet of Things

ઈન્ટરનેટ ઓફ થિંગ્સ

ઈન્ટરનેટ ઓફ થિંગ્સ (IoT) એ એક ક્રાંતિકારી તકનીકી ખ્યાલ છે જેણે ડિજિટલ અને ભૌતિક ક્ષેત્રો સાથે આપણે જે રીતે ક્રિયાપ્રતિક્રિયા કરીએ છીએ તેના પર ઊંડી અસર કરી છે. તેના મૂળમાં, IoT એ રોજિંદા વસ્તુઓ અને ઉપકરણોને સેન્સર, એક્ટ્યુએટર્સ અને સંચાર ક્ષમતાઓ સાથે એમ્બેડ કરવાનો સમાવેશ કરે છે, જે તેમને ડેટા એકત્રિત કરવા અને વિનિમય કરવા સક્ષમ બનાવે છે. સ્માર્ટ ઉપકરણોનું આ પરસ્પર જોડાયેલ નેટવર્ક પરંપરાગત કમ્પ્યુટિંગ ઉપકરણોથી ઘણું આગળ વિસ્તરે છે, જેમાં ઘરેલું ઉપકરણો, ઔદ્યોગિક મશીનરી, પહેરવા યોગ્ય ઉપકરણો અને પર્યાવરણીય સેન્સર જેવી વિવિધ શ્રેણીની વસ્તુઓનો સમાવેશ થાય છે.

સીમલેસ કોમ્યુનિકેશન અને ડેટા-શેરિંગ દ્વારા, IoT વિવિધ ડોમેન્સમાં બુદ્ધિશાળી નિર્ણય લેવાની, ઓટોમેશન અને રીઅલ-ટાઇમ મોનિટરિંગની સુવિધા આપે છે. આ ઈન્ટરકનેક્ટિવિટી ઉદ્યોગો, વ્યવસાયો અને વ્યક્તિઓ માટે સમાનરૂપે પરિવર્તનકારી અસરો ધરાવે છે, જે કાર્યક્ષમતા, નવીનતા અને ઉન્નત અનુભવો માટે અભૂતપૂર્વ તકો પ્રદાન કરે છે.

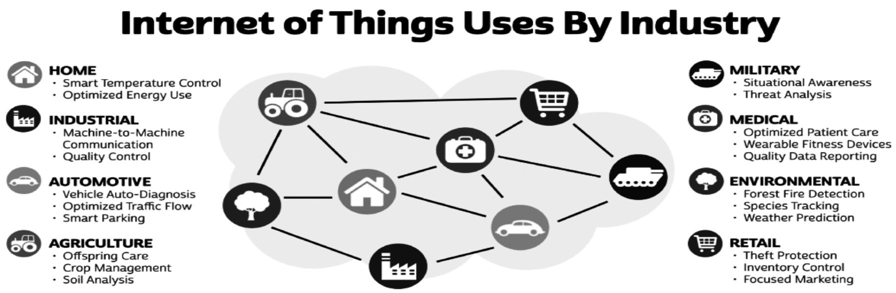

જેમ જેમ ઈન્ટરનેટ ઓફ થિંગ્સ (IoT) તેની ઝડપી ઉત્ક્રાંતિ ચાલુ રાખે છે, તે આપણા રોજિંદા જીવન, વ્યાવસાયિક લેન્ડસ્કેપ્સ અને વિશ્વ સાથેની આપણી ક્રિયાપ્રતિક્રિયાના ખૂબ જ ફેબ્રિકને પુનઃવ્યાખ્યાયિત કરવાની પરિવર્તનકારી સંભવિતતા ધરાવે છે. IoT ટેક્નોલોજીના ચાલુ વિકાસ અને અમલીકરણથી આપણે અસ્તિત્વના વિવિધ પાસાઓનો જે રીતે સંપર્ક કરીએ છીએ તેમાં પરિવર્તન લાવવાનું વચન આપે છે. અમારા રહેવાની જગ્યાઓમાં, IoT સ્માર્ટ હોમ્સ દ્વારા સુવિધા અને કાર્યક્ષમતા વધારી શકે છે,

જ્યાં એકબીજા સાથે જોડાયેલા ઉપકરણો કાર્યોને સ્વચાલિત કરવા, ઊર્જા વપરાશને ઑપ્ટિમાઇઝ કરવા અને વ્યક્તિગત અનુભવો પ્રદાન કરવા માટે એકીકૃત રીતે સહયોગ કરે છે. કાર્યસ્થળમાં, IoT એપ્લિકેશંસ કામગીરીને સુવ્યવસ્થિત કરી શકે છે, રીઅલ–ટાઈમમાં સાધનસામગ્રીના સ્વાસ્થ્યનું નિરીક્ષણ કરી શકે છે અને ડેટા આધારિત નિર્ણય લેવાની સુવિધા આપી શકે છે. વધુમાં, શહેરી વાતાવરણમાં IoTનું સંકલન સ્માર્ટ શહેરો તરફ દોરી શકે છે, જે સુધારેલ ઈન્ફ્રાસ્ટ્રક્ચર, ટ્રાફિક મેનેજમેન્ટ અને જાહેર સેવાઓ પ્રદાન કરે છે.

વધુ કનેક્ટેડ અને સંકલિત વિશ્વ તરફ આ ઉત્ક્રાંતિ પરંપરાગત મોડલ્સમાંથી પ્રસ્થાનનો સંકેત આપે છે, કારણ કે IoT એવા વાતાવરણને ઉત્તેજન આપે છે જ્યાં ઉપકરણો, સિસ્ટમો અને વ્યક્તિઓ સુમેળપૂર્વક વાતચીત કરે છે અને સહયોગ કરે છે. તે માત્ર એક તકનીકી પ્રગતિ નથી પરંતુ એક સાંસ્કૃતિક અને સામાજિક પરિવર્તન છે, જે આપણે આપણી આસપાસના વાતાવરણને કેવી રીતે સમજીએ છીએ અને તેની સાથે જોડાઈએ છીએ તેના પર અસર કરે છે. IoT ની સંભવિતતા એક સીમલેસ અને રિસ્પોન્સિવ ઈકોસિસ્ટમ બનાવવાની તેની ક્ષમતામાં રહેલી છે જે અમારી જરૂરિયાતોની અપેક્ષા રાખે છે અને તેને પરિપૂર્ણ કરે છે, કાર્યક્ષમતા, ટકાઉપણું અને આંતર–જોડાણના ઉચ્ચ સ્તરને પ્રોત્સાહન આપે છે. જેમ જેમ આપણે આ પરિવર્તનકારી સફરમાં નેવિગેટ કરીએ છીએ તેમ, IoT એક નવા યુગ માટે ઉત્પ્રેરક તરીકે ઊભું છે જ્યાં કનેક્ટિવિટી અને તકનીકી એકીકરણ આપણા દૈનિક અનુભવના અનિવાર્ય ઘટકો બની જાય છે.

कन्हैया भट्ट, वडोदरा
मोबा. 9723636711

जाति का अस्तित्व

लगभग 30×40 वर्ष पूर्व तक हमारी आभ्यंतर औदुंबर जाति में वैवाहिक संबंध अपनी ही जाति में किए जाते थे। युवक अथवा युवतिया कितने भी पढ़े लिखे हो उच्च शिक्षा प्राप्त कर ली हो किंतु विवाह के विषय में जाति में ही किया जाना एक अनिवार्यता थी। किंतु पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा का स्तर बढ़ने से नव युवक-युवतियों द्वारा उनकी पसंद एवं योग्यता के अनुसार जीवनसाथी को चयन करने सिलसिला प्रारंभ हुआ। उनकी आय, व्यापार, नौकरी, संसाधन एवं संपन्नता आदि के आधार पर चयन होने लगे। इस कारण जाति की बाध्यता द्वितीय वरीयता पर चली गयी और अंतर्जातीय विवाह अधिक होने लगे हैं। कुछ वर्षों तक तो ब्राह्मण जाति के अन्य वर्गों में ही विवाह होते थे किंतु पिछले कुछ वर्षों में अंतर्जातीय विवाह अधिक होने लगे। अन्य जातियों में वैवाहिक संबंध होने के पश्चात् समाज में अपनी स्वयं की जाति के प्रति उदासीनता देखी गई है। यह एक गंभीर परिस्थिति की ओर संकेत माना जाना चाहिए क्योंकि समाज इस तरह विघटन की ओर बढ़ रहा है। दूसरी जातियों में जनसंख्या की कमी नहीं है अत: उनमें सजातीय विवाह आसानी से हो जाते हैं। ज्ञातव्य है कि हमारी जाति बहुत ही सीमित संख्या में है अत: जाति के प्रति उदासीनता एवं विघटन की परिस्थिति एक गंभीर विषय है जिस पर समाज में गहनता से विचार विमर्श एवं चर्चा की आवश्यकता है। ब्राह्मण समाज के अन्य घटकों से सामाजिक स्तर पर वार्ता कर एकजुट होने की आवश्यकता है ताकि हम अपनी जाति का अस्तित्व बनाए रखते हुए जनसंख्या में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दे। अपने रीती रिवाजों को वर्तमान परिस्थितियों में अन्य समाजों के रीती रिवाजों के अनुसार यदि कुछ परिवर्तन किया जाता है तो उस पर भी विचार किया जा सकता है। विवाह योग्य युवक युवतियों को भी पर्याप्त विकल्प मिल सकेंगे।

राकेश भट्ट जयपुर Mob. 9828109445

जीवन में कभी-कभी कोई हादसे अविस्मरणीय हो यदा गुदगुदाते हैं, ऐसे ही घटनाक्रम को रोचक ढंग से प्रस्तुत कर रहे है वरिष्ठ पत्रकार साहित्यकार राकेशजी रणा।
(प्र.स.)

संस्मरण

अभी तक भूला नहीं

आप हम सब अक्सर कहीं ना कहीं मांगलिक प्रसंगों में आते जाते रहते हैं। ऐसे अनेक शुभ प्रसंग कभी सुव्यवस्था के लिए, कभी स्वादिष्ट भोजन के लिए और कभी कभी किसी अनहोनी बात के सहसा हो जाने पर हमेशा याद रहते हैं।

ये भी स्वाभाविक है कि ऐसे प्रसंगों के लिए हम विशेष पहनावा, परिधान या वेशभूषा पर विशेष ध्यान देते हुए या तो नये सिलवाते है या रेडिमेड लेते हैं या कि अपनी ही वार्ड रोब में जतन से रखी गयी कोई पोषाक पहनते हैं। कई बार तो पदत्राण भी खरीदते है या कहें खरीदने पड़ते है। तो साब एक बार हुआ ये कि मैं अपने एक संभागीय स्तर के वरिष्ठ अधिकारी की ज्येष्ठ आत्मजा के विवाह समारोह में आमंत्रित था। इस समारोह के लिए अपने दफ्तर से इकलौता मैं ही निमंत्रित था इसलिए भी इस प्रसंग में जाने का बिलकुल ही मन नहीं था पर भोजन के तीन दिन पूर्व से अधिकारी महोदय बारम्बार स्मरण करा रहे थे कि सपरिवार आना ही है राणाजी ! सर, जी सर, जी सर कहता करता रहा और फिर शुरु हुई तैयारी। अंडरगारमेंटस, शॉक्स, शूज और ब्रांडेड पेंट-शर्ट, बेल्ट सब एक ही दिन खरीद डाले, जब इन सबको बैग में रखने के लिए धर्मपत्नी से कोई बैग देने को कहा तो तत्काल जवाब मिला नया ही ले आओ, पुराना ले जाओगे तो वो अच्छा नहीं लगेगा ? मैं मन ही मन सोचता रहा बैग अच्छा किसको लगता है। या व्यक्ति नहीं बैग देखे जाते है। पर मन निरुत्तर रहा। फिर बैग भी खरीदा पर वो बहुत बड़ा था। जिसे जीवन संगिनी ने अपने लिए रख लिया। फिर छोटा बैग लिया उसमें कपड़े तो आ गए पर टॉवेल और गिफ्ट रखने की जगह नहीं बची बैग में। फिर ब्राउन कलर का एक और सुंदर बैग खरीदा। सब चीजे व्यवस्थित कर ली गई। ये बताना रह गया कि कपड़ो के साथ टॉवेल और नेपकिन भी नये खरीदे गए थे। अब सवाल ये था, इतने बड़े आयोजन स्थल पर रिक्शे से पहुंचना मतलब स्वयं ही अपनी प्रतिष्ठा के सेंसेक्स को गिराने जैसा था। इसलिए एक फोर व्हीलर से आयोजन के पार्किंग स्थल पर उतरना जरूरी मानते हुए भारी-भरकम किराये वाला फोर व्हीलर लिया गया। यह ध्यान रखा गया कि जो पदत्राण पहनकर आयोजन में भाग लेना है वह भी कार की डिक्की में अखबार से लपेटकर रख लिए गए है और फिर यात्रा शुरु हुई।

सूर्य अस्ताचल को जा रहे थे तब भोपाल के उस भव्य दिव्य मैरेज गार्डन के पार्किंग में कतार में खड़े वाहनों के बीच ड्रायवर ने हमारी गाड़ी लगाई। दरवाजा खोल कर उतरे तो देखा महंगी कारों के बीच हमारी गाड़ी रिक्शा जैसी लग रही थी। मन कलप गया पर आगे बड़े मेजबान अधिकारी ने खुशी से गले लगाते हुए शिकायत की, कि बहुत लेट हो गए राणा। जी सर कहता हुआ आगे बढ़ा, साहब के बंगले पर तैनात प्यून ने गार्डन की दूसरी मंजिल पर स्थित कमरा खोला और बोला सर जल्दी से फ्रेश हो जाओ, बारात आने ही वाली है।

मैं फ्रेश हुआ, नए टावेल से मुंह पोंछा आईने में खुद का मुखड़ा नया लगा। सर के गिने-चुने बालों में कंघी फेरी और नई पीटर इंग्लेंड की ड्रेस, व्हाईट फुल बांह का शर्ट, ब्लेक पेंट पहना नए बेल्ट से कमर कसी। सफेद झक शॉक्स पहने, बाटा के नए ब्लेक शूज पहने, चाय पी और तब तक गार्डन के प्रवेश द्वार पर पटाखे, बाजे और समुधर गीत बहारो फूल बरसाओ की आवाजे एक साथ आने लगी। फटाफट नीचे उतरा, प्रवेश द्वार पर खड़ी भीड़ की तरफ दौड़ा, मेरे मेजबान और उनकी धर्मपत्नी के हाथों में फूल मालाएं थी। तभी बंगले का प्यून मेरे पास आया और कान में धीरे से कहा, सर इधर आओ, मैंने कहा क्या हुआ ? वह बोला आओ तो सरी। उसके साथ मैं चला, गार्डन में झमाझम रोशनी के बीच चारों और लगी टेबलों पर खाने के पात्र ढंके हुए चमक रहे थे। ठीक उनके पीछे अनुशासित वेटर खड़े थे। मैंने ढंकी भोजन सामग्री के पात्रों को बहुत ध्यान से देखा। तभी प्यून बोला सर, उधर देखो ? मैंने कहा कहां ? वो बोला वेटर को देखो, तब देखो तो सभी वेटर्स काली पेंट, सफेद शर्ट, फूल बांह की कमीज में अटेंनशन खड़े थे, प्यून आंखों में मुस्कुराता हुआ फौरन रफूचक्कर हो गया, मैं स्तब्ध, हतप्रभ होकर मेरी और वेटर्स की ड्रेस में अंतर ढूंढने लगा। वेटर और मेरी वेशभूषा में रत्तीभर भी अंतर नहीं था। मैं तत्काल चेतन्य हुआ और प्यून को ढूंढने लगा। प्यून प्रवेश द्वार पर हो रही रस्मों को देख रहा था। मैंने उससे कहा, साहब पूछे तो कह देना, राणाजी की तबीयत खराब हो गई और वो अपने रिश्तेदार के घर चले गए है। भीड़ में से बचता-बचाता झटपट बाहर निकला, मेरा ड्रायवर छूट रहे अनारों को देख रहा था, मैंने उसे आवाज दी और फौरन मैरेज गार्डन से निकल पड़ा।

सप्ताह भर बाद साहब ने फोन लगा कर पूछा, राणा कहां गायब हो गए थे ? मैंने कहा सर मेरा बीपी बढ़ गया था सॉरी।

साहब को मेरी बात पर भरोसा हुआ या नहीं, मुझे नहीं मालूम। पर मैं इस घटना को अब तक भूला नहीं।

राकेश राणा
झंडा चौक, खरगोन
मोबा. 9479577463

।। ग़ज़ल ।।

राहे–उल्फ़त में ख़्वाहिशें कैसी
हमसफ़र से गुजारिशें कैसी ।।1।।

भूल जो हो गई किसी से ग़र
भूल जाओ, ये रंजिशें कैसी ।।2।।

अपनी मर्ज़ी से साथ चलता हूँ
फिर वहम् कैसा बंदिशें कैसी ।।3।।

ईश की खोज में चले हैं सब
वो तो है दिल में काविशें कैसी ।।4।।

सच तेरा या मेरा नहीं होता
उसकी खातिर सिफ़ारिशें कैसी ।।5।।

वो सितमगर महाज़ है अब तो
फिर बचाने कि साजिशें कैसी ।।6।।

जो तुम्हें नापसंद थे कलतक
आज उन पर नवाज़िशें कैसी ।।7।।

बात दिल की अवाक ही कह दो
प्यार की ये नुमाइशें कैसी ।।8।।

काम करते नहीं दिखाते हैं
इस तरह की ये कोशिशें कैसी ।।9।।

स्वरचित – हिरेन अरविंद जोशी 'अबोध'
वडोदरा मोबा. 9825173005

माँ

મા ના તો બધા દિન માની બધી રાત
અલાયદી ને અદકેરી માની જુદી જાત
માંના ખોળે રમતા લાગે જોનેનવલી રાત
જમવાનું એના હાથે મારા હૈયે હાશ
નથી તોય જો છે દિલે
એના પગલાં ની ભાત
મારી માં ને તારી માની
સરખે સરખી વાત
એની સામે ઊભા રહીને
હરિ એ ખાએ માત
શ્રીમંત હોય કે હોય ગરીબ ની
માની સરખી જાત
કાકા મામા પપ્પા ફુઆ
માં સૌ સંબંધો ની તાત...

कौशल पुरानी
'निशब्द' बड़ौदा
9898012869

शब्दार्थ –काविशें – तलाश/ महाज़ – सामने/ नवाज़िशें – कृपा /अवाक – चुपचाप

शैक्षिक जगत के श्रीफल थे...प्रकाश राणा

शिक्षा के संस्कार और संस्कार की शिक्षा देकर अपने छात्रों को श्रेष्ठ नागरिक बनाना, किसी भी शिक्षक का अंतिम ध्येय होता है पर इस ध्येय के लिए कठोर, निष्ठुर और क्रूर कार्यशैली के साथ अनुशासनात्मक शिक्षण की कला मे निष्णात थे स्वर्गीय श्री प्रकाशचंद राणा इसलिए किसी सरकारी स्कूल के टीचर को विद्यार्थी का पिता, पालक या अभिभावक अपने सुपुत्र को मारने-पीटने पर नाराज न होते हुए यह कहे कि और मारना सर, पर इसे पढ़ाना जरूर। यह विश्वास ही वो धरोहर या पूंजी थी जिसने स्वर्गीय शिक्षक श्री प्रकाश राणा को शैक्षिक जगत में लोकप्रिय और नामचीन बनाया। प्रकाश भाई ने अपने शैक्षिक दायित्वों के साथ मिले अतिरिक्त दायित्वों को इतनी कुशलता से निर्वाहित किया कि वे दो-दो बार राष्ट्रपति पदक से सम्मानित हुए।

शिक्षक प्रकाश भाई का मानना था कि छड़ी पड़े, छम-छम और विद्या आए घम-घम। इसलिए पढ़ाते समय वे अपने छात्रों के साथ कठोर और निष्ठुर थे। पर इससे बड़ा एक सच यह भी था कि वे अपने विद्यार्थियों को इंटरवल में रोज चॉकलेट, बिस्किट भी देते थे। उन्होंने अपने निज निवास पर कभी किसी विद्यार्थी को ट्यूशन नहीं दी। पर गरीब बच्चों के घर जाकर और उन्हें पठन-पाठन की सामग्री देकर निःशुल्क पढ़ाया। 38 वर्ष तक सरकारी विद्यालय में अध्यापन के मध्य प्रकाश भाई जिस स्कूल से स्थानांतरित होते तो उस स्कूल के विद्यार्थी उनके स्थानांतरण का तीव्र सामूहिक विरोध किया करते थे। इसीलिए लंबे समय तक वे एक ही स्कूल में पदस्थ रहे।

प्रकाश भाई एक लोकप्रिय शिक्षक के साथ-साथ सिद्धहस्थ इलेक्ट्रिक और इलेक्ट्रानिक उपकरणों के मैकेनिक भी थे और छात्र जीवन में अनेक कविताएं भी उन्होंने रची जो छपी और पुरस्कृत भी हुई। अपने पेशे के विरूद्ध मैकेनिक जैसे हूनर के साथ वे अपने दोनों ही कार्यों को कैसे निभाते करते रहे यह व्यवहारिकता में एक अचरज ही है। प्रकाश भाई के मैत्री संबंध कभी प्रकाश काका, तो कभी प्रकाश मामा के आत्मीय रिश्तों से जुड़कर प्रगाढ़ और स्थाई हो गए। वे अपने मित्रों और परिचितों की मदद और सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहे। उन्हें अपनी विभागीय प्रक्रिया, नियमों, परिपत्रों, अध्यादेशो का वृहद ज्ञान था, जिससे उनके असंख्य मित्रों को प्राय: वित्तीय लाभ हुआ और सस्पेंशन व पेंशन की प्रक्रिया की गहरी समझ उन्हें थी तो शासन के परिपत्रों के क्रमांक, दिनांक तक भी उन्हें हमेशा याद रहते थे। वास्तविकता तो यह थी कि दृढ़ता उनकी सुगंध थी। आनंद उनका जीवन था, सत्कर्म उनकी शोभा थी और परोपकार उनका कर्तव्य था।

मित्रों के बीच उन्होंने हमेशा धन को तरल द्रव्य (पानी) ही माना और अपने धन का पानी की तरह ही उपयोग, उपभोग किया, पर कपड़े और चप्पल सस्ते ही पहने। वे जहां-जहां पदस्थ रहे, वहां-वहां उन्होंने अपने सहकर्मी स्टॉफ के लिए साप्ताहिक सहभोज की परंपरा शुरु की। मनमौजीपन और फक्कड़ता में वे बेजोड़ थे। खुद के या मित्र शिक्षकों के सरकारी पेचीदगियों वाले प्रकरणों में वे खुद अकेले लड़कर भले ही जीतते रहे, पर श्रीफल जैसे स्वभाव और पंचामृत जैसे मन का यह व्यक्तित्व अपने ही शारीरिक रोगों से अंत में हार ही गया। सत्य तो यही है कि

चल दिए तुम लंबे सफर पर, एक छोटी सी उम्र लेकर
काश बढ़ जाती तुम्हारी उम्र, हमारी उम्र लेकर।
जो मौत तुम्हें आई है, वो सभी को आनी है।
पर बेवक्त चले गए तुम, यह करूणा नहीं कहानी है।

ईश्वर आपकी दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे। कलश पूजा परिवार का शत-शत नमन ॐ शांति।

कलश पूजा परिवार

अंतरनिनाद

गीत सुनोगी? मुझसे कविता!
भावों की अल्हड़ सी सरिता।।
नयन-कक्ष ने स्वप्न बुनें है।
पीड़ा के संदर्भ चुनें है।।

निरत-चेतना, कुछ बुनने को।
सतत अड़ी है कुछ सुनने को।।
विजन डगर पर,चली अकेली।
खड़ी मिली तब, वहीं सहेली।।

सखी! तुम्हें भी गीत सुनाऊँ?
स्वरित-सिंधु के बोध गिनाऊँ।।
संवेदन अति क्षार भरे हैं।
सजल-नयन से हुए हरे हैं।।

जो न हृदय में पीड़ा होती।
पतझड़ में मधुमास न बोती।।
अल्हड़,पन्नों से अठखेली।
नित्य सुनाती नई पहेली।।

यथा नाम तस गुण मिल पाते।
कविते!मुधुरिम गीत सुनाते।।
फिर भी अंतस, स्वर-समिधा ये।
अभिसारित वर्णित अभिधा ये।।

मात्र मनोरथ हृद बैठा था।
कुछ कहने आतुर,पैठा था।।
यक्ष सामने, प्रश्न हजारों।
हँस कर बोले,भले पधारो।।

रागिनी शास्त्री
दाहोद
09638672245

समझो

जीवनभर भागा न मिला छोर,
मैं तो श्रम कर रहा था,
भोग रहा था कोई ओर।

लाख चाहों परिणाम निश्चित है,
चलता नहीं कोई जोर।

पर अंधकार के बीच एक
आशा है आयेगा नया दौर।

जो नहीं प्राप्त है मत उलझो,
जो आसानी से मिला है
उसे अपना समझो।

यही जीत है यही है सच्चाई
खुशी से होने वाली
लगती है अच्छी जुदाई

घृणा से अच्छी है
प्रेमभरी विदाई समझो।

किरण राणा
इंदौर
9425348647

કુર્યાતસદામંગલમ

કેતનઆચાર્ય

મુંબઈમાંડિસેમ્બર, જાન્યુઆરીઆવેએટલેઠંડીનોચમકારોલાગેપણપાછુંસ્વેટરપહેરીએતોગરમીલાગે. મુંબઈગરાનેઆસમયમાંગામમાંજવાનુંમળેતોહરખઘેલોથઈજાય.

મારાપાડોશીઅનેપરમમિત્રજયંતનાએકનાએકદીકરારાહુલનુંલગ્નજાન્યુઆરીમાંગુજરાતનાખેડાજિલ્લાનાસેવાલિયાગામમાંરાખ્યુંહતુંઅનેસોસાયટીનાદરેકઘરનેઆમંત્રણમળવાનુંહતુંતેથીબધાનાઘરમાંઉત્સાહનુંવાતાવરણહતું.

ચકુડોજેનુંરાહુલનુંલાડનુંનામઅમારાસાખપાડોશીરસીલાકાકીએતેનામાંઅનેબાપનેપૂછ્યાવગરપાડોશીનાહક્કથીઆપીદીધુંહતું. આમેયઅમારીસોસાયટીખીજપાડીદેવાનીજૂનીપરંપરાચાલતીઆવેછે. મારેમાથેથીવહેલાવાળજતારહ્યાતેથી'અંકલ' અનેજયંતસૌથીવહેલોઉઠીકામપારજાયતેથી'કૂકડો'

મારાબાજુનાઘરમાંરહેતાશેરબજારિયાપ્રાણકાકાઅનેરસીલાકાકીનીવહેલીસવારથીજુગલબંધીચાલીરહીહતી

'ચાલોજલ્દીનાહીલોઅનેતૈયારથઈજાવએટલેકુકડાનેત્યાંકંકોત્રીલખવાજવાનુંછે'

રસીલાકાકીએકડકઅવાજેહુકમકર્યો.

પ્રાણકાકાપેપરમાંશેરબજારનાભાવજોતાહતાતેહબકખાઈનેઉભાથયાન્હાવામાટેબાથરૂમમાંઘૂસીગયાઅનેધીમેઅવાજેગાવાલાગ્યા

(રાગ :કંકુછાંટીકંકોત્રીમોકલી....

આંખોકાઢીતતડાવેછેઅમને
ભોળાભાવેસહનકરીલઈએઅમે
જ્યાંત્યાંઉતારીપાડેછેઅમને
જાણેદુનિયાઆખીનોભારએઉપાડે

રસીલાકાકીસાંભળીગયાનેદરવાજોજોરથીખખડાવવામંડ્યા'કોનામરસીયાગાવછો, નીકળોજલ્દીબહાર'.

એટલામાંચકુડોલાંબીફલાંગભરતોબૂમપડતોઆવ્યોપ્રાણકાકા, રસીલાકાકી, અંકલ, આંટીતમનેકંકોત્રીલખવાબોલાવેછે.

જયંતનીઘેરબધાઉમંગમાંહતાસિવાયકેજયંતનીપત્નીજયાભાભી,

તેઓગમગીનીચહેરેકોઈનીરાહજોઈરહ્યાહતા. મારીપત્નીનેજોઈથોડાસ્વસ્થથયા.

'સારુંથયુંતમેઆવીગયાજુઓનેહજીભાવનાબહેનઅનેબનેવીઆવ્યાનથી.

એમનાઆવ્યાવગરકંકોત્રીલખવાનુંચાલુકરશુંતોહોબાળોમચાવશે.'

જયંતનીબહેનભાવનાગરીબગાયજેવીપણબનેવીકનૈયાલાલઉર્ફેકનુકુઆથીઆખુંઘરથરથરકાંપે.

એવામાંચકુડાએબહારથીબૂમલગાવીપ.પૂ. ધ. ધૂ. કુઆઆવીગયાછે, નેકનુંકુઆસાંભળીગયાઅનેઆવતાનીસાથેગિન્નાયા. નાલાયકતનેહુંપપ્પુલાગુછું.

ના,
ફુઆમેંતમનેપપ્પુનથીકહ્યા,મનેખબરછેતમેનાહ્યાવગરખાતાનથીઅનેઅબોટિયુંપહેરીયાવગરજમવાબેસ તાનથી. તમેકાંદાલસણકેબજારનુંખાતાનથી, ફક્તબજારમાંથીમંગાવેલપ્રસાદજઆરોગોછો, જોકેપ્રસાદમાંતમનેકચોરીબહુભાવેછેતેથીમેંતમનેપરમપૂજ્યધર્મધુરંધરફુઆકહ્યા.
જયાભાભીએચકુનેટપાર્યો, જાઅંદરઅનેબેગપેકકરવામાંડ, કાલેસવારેટ્રેનપકડવાનીછે., 'જિયાજીપધારો, તમેએનીવાતમનપરનાલેતા.'
મેંટાપસીપુરી' આવોજિયાજી, ચકુતોબાળકછે.
'ચુપરહેવાયડા, છોકરોપરણવાનીકળ્યોછેઅનેતુંએનેબાળકકહેછે'.કનુફુઆઆદતમુજબમારીપરઘુરકિયાં.
થોડીરકઝકકરીપાંચકંકોત્રીલખાયીએટલેકનુફુઆનેજમવાબેસાડિઆ,
સમયસરલગ્નમાંઆવવાનુંભાવભર્યુંઆમંત્રણઆપ્યુંઅનેઉબેરટેક્સીકરીપાછાઘેરમોકલીઆપ્યાત્યારેજયા ભાભીનાજીવમાંજીવઆવ્યો.
કનુફુઆનાગયાપછીમેંઅનેપત્નીએજયંતઅનેજયાભાભીનીવિદાયમાટેપરવાનગીમાંગી,
તોજયંતેમારાહાથમાંકંકોત્રીઅનેટ્રેનનીટિકિટમૂકી. 'તમારેઅમારીસાથેજઆવવાનુંછે' જયાભાભીએઆગ્રહકર્યો.
'મારેઓફિસેમાંબેત્રણદિવસનોખાડોનહિપડાયઅનેઆમેમનેટ્રાવેલિંગનીએલર્જીછે' મેંબચાવકર્યો
જયંતગળગળોથઈગયો, કહે' તમારાસિવાયઆકનુફુઆનેકોણસાચવશે? તમનેખબરછેનેમારાથીતોતેમનેકશુંકહેવાતુંનથી.
ગામનાબ્રાહ્મણસમાજનેસાચવવામાંથીહુંઊંચોનહિઆવું. ભાભી, તમેજરાભાઈનેસમજાવોને' જયંતેઅંતિમસશ્ત્રવાપર્યું.
'કહુંછું, તમેતોક્યારેફરવાલઈનથીજતા, જયંતભાઈતેમનાખર્ચેલઈજાયછે, પછીશુંવાંધોછે?' મારીપાસેજવાબનારહ્યોપણમેંશરતકરી,' હસ્તમેળાપપછીહુંનહિરોકાઉંલગ્નનાદિવસેજનીકળીજઈશ'
'હાભાઈહાનીકળીજાજો,
બનેવીનેબીજાનાલગ્નમાંડખોકરવાજવાનુંછેતેથીબેનઅનેબનેવીપણનીકળીજવાનાછે'.છેવટેઅવાજોકહી છુટાપડ્યા.
ગામનીઠંડીમાણતા, તાજાશાકભાજીઅનેદૂધઆરોગતાદિવસોપસારથવામંડ્યા.
જેમજેમગ્રહશાંતિનોદિવસનજીકઆવતોગયોતેમજયાભાભીનુંટેન્શનવધતુંગયું,
આજેકનુફુઆઆવવાનાહતા. વહેલીસવારેભાવનાબહેનઅનેકનુફુઆરીક્ષાવાળાજોડેરકઝકકરતાપધાર્યા.
જયાભાભીએકહાથમાંગોળનોવાડકોઅનેબીજાહાથમાંપાણીલઈબનેવીનેઆવકારવામંડ્યા.
ભાવનાબેનનેતોસ્વાગતનીજરૂરતનહતી.
ભાવનાબેનજયાભાભીનેભેટ્યાઅનેગળેડૂમોભરાઈગયોઅનેકાનમાંકીધુંજીજાજીહવેતમારેહવાલે.
'આખાગામનારીક્ષાવાળાગઘેડાજેવાછે' કનુફુઆનોગુસ્સોશાંતનહતોથતો.
'જીજાજી, બેસોને, હમણાંગરમચ્હાલઈઆવું' જયાભાભીબનેવીનેશાંતકરવાનોનાહકનોપ્રયત્નકરીરહ્યાહતા, જયંતેફાફડાનોબંદોબસ્તકર્યો.

હુંતેમનીસાથેચ્હાપીવાબેઠો, મનેકહે'ચ્હાપાણીજેવીછે, અહીંનીભેંશોદૂધઆપેછેકેપાણી?'
'આતોઅમુલનુંદૂધમુંબઈમાંઆવેછેતેજદૂધછે, કદાચઠંડીમાંપાતળું પાડીગયુંહશે'
મેંતેમનેહસાવવાબિનજરૂરીજોકમારી. હવેકનુકુઆનેસંભાળવાનીજવાબદારીમારીહતી
થોડીવારમાંગ્રહશાંતિનોહવનપ્રજ્વલિતથયો,
જયંતઅનેજયાભાભી,કનુકુઆનોખોમનેઆપીનિશ્ચિન્તથઈપાટલેબેઠા.
થોડીવારમાંકનુકુઆપાનખાવાબજારમાંગયાઅનેહુંન્હાઈધોઈનેતૈયારથવાગયો.
મંત્રોચ્ચારઅનેવહેવારસાથેકલાકેકમાંગ્રહશાંતિઅંતિમચરણમાંપહોંચી.
ગોરમહારાજેએલાનકર્યુંલગતાવળગતા,સગાવહાલાઅનેમહેમાનોનેબોલાવોનાળીયેરહોમવાનુંછે.
જયાભાભીએસૂચકનજરેમનેકનુકુઆમાટેપુચ્છયુ, કનુકુઆપાનખાઈનેહજીઆવ્યાનહતા.
હુંપાનનીદુકાનેદોડ્યો. ચકુનેકનુકુઆનેશોધવાતળાવપરમોકલ્યો,
બીજાબેટાબરિયાંનેનિશાળનાચોકમાંમોકલ્યા,
પ્રાણકાકાનેએસટીસ્ટેન્ડપરમોકલ્યા.બધાનિરાશપાછાઆવ્યા, કનુકુઆનોપત્તોનહતો.
જયંતહાથમાંનાળિયેરપકડીસ્તબ્ધઉભોહતો, જયાભાભીબેચેનહતા.
અડધોકલાકજેવોસમયપસારથઈગયો. ચકુનીધીરજખૂટીગઈ'પપ્પાતમેનાળિયેરહોમીદો,
હવેરાહજોવાનીજરૂરનથી.' દૂરઊભાઊભાભાવનાબેનરડીરહ્યાહતા.
ત્યાંમારીનજરજાજરૂતરફપડી, કનુકુઆજાજરૂમાંથીનીકળ્યા,
હુંતેમનાતરફદોડ્યો'ચાલોબનેવીલાલબધાતમારીરાહજોવેછે'
'ના, મારેતોનહાવુંપડશે, સોચપછીમારેનાહવાનોનિયમછે'.
'હુંતમનેપાણીછાંટીશુદ્ધકરૂંછૂ' અપવિત્રોપવિત્રોવાસર્વાવસ્થામગતોપીવા.......'
જેમતેમકરીકનુકુઆમનાવીનેલઈઆવ્યોઃનાળિયેરહોમાયું.
એટલામાંકન્યાપક્ષતરરફથીસમાચારઆવ્યા,
કન્યાનીદાદીમાવેન્ટિલેટેરપરછેઅનેકોઈપણઆગાહીથઈશકેતેમનથી, લગ્નઝડપથીઆટોપવાપડશે.
જયંતઅનેજયાભાભીબઘવાઈગયા.
જયંતકહે' મનેનથીલાગતુચકુનીવડસાસુલગ્નહેમખેમપારપાડશે'
'એબધુંકન્યાપક્ષવાળાએવિચારવાનુંતુંવરઘોડાનીતૈયારીકર' મેંજયંતનેહિમ્મતઆપી.
વસંતઅનેહલવાકલવાનીરસમઝડપથીઆટોપી
થોડીવારમાંઘોડો, બેન્ડવાજા, સાફાવાળાએકપછીએકઆવવાલાગ્યા.
સાજનમાજનચોકમાંએકઠુંથવામાંડ્યું. ગામનાછોકરાફટાકડાફોડવામંડ્યા. ચકુડાનેહારતોરાકર્યા,
વિદેશીઅત્તરનોછંટ્કાવથયો, ચકુનાહાથમાંનાળિયેરપકડાવ્યું, ચકુડોમરકમરકહસતોહતો,
ફોટોસેશનપત્યુંએટલેખુરશીલાવીચકુનેઘોડાપરબેસાડ્યો. બેન્ડજોરજોરથીવાગવાનુંશરુથયું
જયંતઅનેજયાભાભીતૈયારથયાહતાપણમૂડઆઉટહતો,
ગમેત્યારેકાંઈપણસમાચારઆવીશકેછેએવોદિલમાંફડકોહતો.

એવામાંકનુકુઆક્યાંકથીબેપેગલગાવીઆવ્યાઅનેઝૂલતાઝૂલતાઘોડાપાસેઆવીબેન્ડવાજાનેઉદ્દેશીનેબૂમો પાડવામંડ્યા'બજાઓ, બજાઓઈમાનદારીસેબજાઓ'

પછીચકુનામોઢામાંઉપરાઉપરી૧૨૦કિમામનાબેપાનભરાવીદીધાનેજાનઉપડી'આજમેરેયારકીશાદીહૈ, યારકીશાદીહૈદિલદારકીશાદીહૈ.....

હવેલોચોએપડ્યોકેચકુનીબોલતીબંધથઈગઈ. મોઢામાંપાનરસનોકુંડભરાવામંડ્યો. જેમકુગ્ગોધીરેધીરેફૂલાવીએતેમમોંફુલતુંગયું, નેચકુનોચહેરોબિનવગાડતામદારીજેવોફૂલીગયો.

'સ્માઈલપ્લીસ' ફોટોગ્રાફરબોલ્યો, ચકુનેપાનનુંવિસ્મરણથયું, કોલગેટજેવાસ્માઈલસાથેજોરથીહસ્યો, ડેમતૂટ્યોઅનેફૂઉઉઉસકરતોફુવારોઉડ્યો. રેલાથીગાલલાલ, શેરવાનીપણલાલ. કનુકુઆપણરંગાયા, એમનોનશોઉતરીગયોચકુપરભડકીગયા ...'બેવકૂફ.....નાજોયોહોયતોપાનખાનારો' જયંતનાપગધ્રુજવામંડ્યા. જયાભાભીએગમેત્યાંથીપાણીનોબંદોબસ્તકર્યો, મેંચકુઅનેકનુકુઆનાડાઘદૂરકર્યા. કનુકુઆનેશાંતપાડ્યા. જયાભાભીએમનોમનગણપતિનીબધારાખી, બધુંસમુસુતરુંપારપાડશેતોર૧લાડવાનોભોગલગાવીશ.

ધીમેધીમેવરઘોડોઆખાગામમાંફરીવાજતેગાજતેમાંડવેઆવીનેઉભોરહ્યો. પોંખવાનીરસમપુરીથઈ. ચકુનેશરદીથઈહતીતેથીસાસુએનાકખેંચવાનુંજોખમનાલીધું.

જાનૈયાઅનેજાનડીઓમાંડવામાંગોઠવાયા. લગ્નનાફટાણાનીરમઝટચાલુહતી, તેવામાંગોરમહારાજેએલાનકર્યું'કન્યાપધરાવોસાવધાન'

કન્યાએસ્ત્રીસહજલજ્જાનેમર્યાદાનાભારથીધીમેપગલેમામાનોહાથપકડીમાયારામાંપગમુક્યો.

અંતરપટખેંચાયો, મંગલાષ્ટકશરુથયા

'કસ્તુરીતિલકંલલાટપટલે,વક્ષસ્થલેકૌસ્તુભમ.......કુર્યાતસદામંગલં' હસ્તમેળાપપૂરોથયો.

ચકુનીસાસુજયાભાભીપાસેઆવીનેકહે'બાનેહવેસારુંછે, વેન્ટિલેટરકાઢીલીધુંછે' જયાભાભીનેહાશકારોથયો.

જમણવારશરુથયો.

કનુકુઆપહેલીવખતપેન્ટશર્ટમાંમારીસાથેજમવાઆવ્યાઅનેમનેસમજાવવામંડ્યા'લગ્નપ્રસંગમાંકોઈવાર બાંધછોડકરવીપડે, હુંઘરનુંજખાવાનોઆગ્રહનથીરાખતો, મારેલીધેજયંતનેતકલીફનાથવીજોઈએ' કનુકુઆએએકપછીએકવાનગીખાવાનીશરુકરી. હુંલૂસલૂસજમીજયંતનેજયાભાભીનીવિદાયલેવાગયો. જયાભાભીકહે' તમેઈડરિયોગઢજીતવામાંખુબસહકારઆપ્યો' બધાનીઆંખભીનીથઈનેહુંવંદેભારતટ્રેનપકડીઘેરપહોંચ્યો.

केतन आचार्य मुंबई
मोबा. 7715998833

सोशल मीडिया के जितने उपयोग है उतनी ही दुरुपयोग भी है। ये व्यक्ति पर निर्भर है वह किस तरह से प्रयोग करे इसी का विश्लेषण कर रही है हमारी विदवत लेखिका वंदना जी चौबे। **(प्र.सं.)**

वाट्सएप और चैटिंग ने स्वाध्याय से विमुख किया

अच्छे विचारो का संकलन हमे अध्ययन, पठन-पाठन और स्वाध्याय के द्वारा ही प्राप्त होता है। किसी विषय को चुन कर उस पर मंथन आपस मे चर्चा करना ही स्वाध्याय की कढ़ी है जो हमारी बौद्धिक क्षमता को परिपक्व करती है और एक नई दिशा प्रदान करती है।

किंतु आज इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ने हमे अकेला बना दिया है,

मैं और मेरा मोबाइल बस दुनिया यही तक सिमित रह गई है।जितना यह सुविधा का साधन है उतना ही दुविधा का भी।

यह एक व्यसन की तरह है जिसके बिना रहा नही जा सकता,इसने मानव जीवन को बहुत ही आसान बना दिया जो हमारी हर जरूरत को किसी न किसी रूप मे मदद करता है यह किसी अलादीन के चिराग से कम नही लेकिन सिर्फ तब तक जब हम इसका सही उपयोग करे, इसमे कुछ हद तक मै भी लिप्त हुं।

इस चाहत ने हमे हमारी दैनिक कार्य शैली और गतिविधियो

से विमुख कर दिया। हमारा अधिकांश समय वाट्सएप और

चैटिंग में चला जाता है, कुछ चाहिए तो गूगल सर्च करो त्वरित हल मिलता है किंतु इससे स्वयं की सोच की क्षमता क्षीण होती जाती है। इस तरह वार्तालाप का दौर खत्म सा

हो गया है आज कुछ विचारो को व्यक्त करने के लिए मेरे पास विषय का अभाव है।अभिव्यक्ति तभी संभव है जहां विचारो का संकलन होता है विषय परक परिसंवाद होता है

और नई सोच का उद्भव होता है जो शब्दो मे पिरोकर लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा सके ।

अत: बौद्धिक क्षमता को परिपक्व करने के लिए स्वाध्याय उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आज हमारे लिए मोबाइल ।

वन्दना चौबे, इंदौर
मोबा. 7389334689

अपने स्थायी कालम के माध्यम से हमारे वरिष्ठ समाजसेवक कैरियर काउंसलर ब्राह्मण समाज के परम शुभचिंतक संदीप जी भट्ट युवाओं के लिए अपना मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। (प्र.सं.)

कैरियर मार्गदर्शन

યુવામિત્રો,

ગ્રેજ્યુએશન લીધા બાદ કારેયર ઓપ્શન માં ક્યાં જવુ એ એક યક્ષ પ્રશ્ન યુવામિત્રોને સતાવતો હોય છે. અને ત્રિભેટે આવીને આ પ્રશ્ન માં ક્યાંય અટવાઈ જવાય નહીં તે માટે દરેક ડિગ્રી હોલ્ડરેં પોતાના માટે જ લક્ષ્યાંક નક્કી કરવો પડતો હોય છે. તમારી પાસે વધુ અભ્યાસ અર્થે સ્થાનિક યુનિવર્સીટી માં ચાલતા અભ્યાસ કર્મો ઉપરાંત વિદેશો માં પણ અનેક અભ્યાસક્રમો ચાલતા હોય છે જેનો લાભ લેવાય. આ બાબતે જો વિદેશ માં જવુ હોય તો ગુજરાત સરકાર માં " બિન પછાત આયોગ " દ્વારા વિવિધ લોનો પણ ઉપલબ્ધ છે જેનો લાભ મેળવી શકાય. આ આયોગ દ્વારા સ્થાનિક અભ્યાસક્રમો માટે માં વિદ્યાર્થીઓને લોન મળે છે જે અંગે ની માહિતી આયોગ ની કચેરી વડે માહિતી મેળવી શકાય.

અત્યારે ડિગ્રી એન્જીનીર માસ્ટર ની ડિગ્રી માટે પ્રયત્નશીલ હોય છે એમ નોન ટેક્નિકલ સ્નાતકો માટે **management** અંગે ના અનેક અભ્યાસ ક્રમો ચાલતા હોય છે જે ભારત ના ઉદ્યોગ જગત ને પૂરક બનતા રહ્યા છે.

આ ઉપરાંત ટેક્નિકલ, બિન ટેક્નિકલ અનેક અભ્યાસ ક્રમો **Skill India** ના કાર્યક્રમ અંતર્ગત ગુજરાત સરકાર તેમજ ભારત સરકાર દ્વારા અનેક અભ્યાસક્રમો વિવિધ શિક્ષણસંસ્થાઓ દ્વારા ચલાવવામાં આવે છે જેમાં ટૂંકા સમયગાળા માં ઘણા કિંમતી કોર્ષ કરીને જીવન ની રાહ બદલી શકાય છે આ કોર્ષમાં લગભગ 1000 સ્કિલ નક્કી કરવામાં આવી છે અને સમગ્ર ભારત માં જેતે પ્રદેશ ની જરૂરિયાત ની સામે યોગ્ય સ્કિલ્સ ને અભ્યાસ ક્રમ માં લેવામાં આવી છે.ઉદાહરણ તરીકે કોઈપણ શાખા માં અભ્યાસ કરેલ કોઈ વિદ્યાર્થી વિદેશની ભાષા શીખી જાય તો એને માટે રોજગાર ની તકો બદલાઈ જાય છે જેમકે ચાઇનીસ, જાપાનીશ. ભાષા. આજે અનેક વિદેશી

કંપની ઓ દેશમાં આવેછે એમને સ્થાનિક ભાષા ની તકલીફો હોય ત્યારે તમે જો અન્ય વિદેશી ભાષા જાણો તો રોજગારી વધુ એક તક નવી દિશામાં મળી શકે.

ગુજરાત માં આ વર્ષે જાન્યુઆરી માસ માં 1960 થી એટલે કે સ્થાપના કાળ થી શરુ કરીને આજ સુધી માં ક્યાંય પણ ના આવી હોય તેવી ગુજરાત સરકાર દ્વારા આ વખતે સરકારી સ્પર્ધાત્મમક પરીક્ષા વડે સરકારી ભરતી ની વિવિધ વિભાગો માટે સંખ્યાબંધ જગ્યાઓ આશરે 4000 થી વધુ બહાર પાડવામાં આવી છે. સમગ્ર યુવા જગત ને આ ભરતી પ્રક્રિયા બાબતે જેતે શહેર ના વિવિધ સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓ ના ક્લાસીસ ચાલતા હોય, વર્તમાન પત્રો વિવિધ મેગેઝનો દ્વારા માહિતી મેળવી લેવી જરૂરી છે આ ભરતી માં લેખિત પરીક્ષા યોજવામાં આવનાર છે અને તેનું ફોર્મ ભરવાની છેલ્લી તારીખ 31/01/2024 છે જેથી આ ફોર્મ ભરવુ. સાથે સાથે આ પ્રકાર ની માહિતી માટે ઇન્ટરેરનેટ ના માધ્યમ વડે ગુગલ માં જઈને "ઓજસ " ઉપર જઈને વધુ માહિતી મળી શકશે. સાથો સાથ રોજગાર સમાચાર જે ગુજરાત સરકાર દ્વારા બહાર પડતું હોય છે તેનું વાર્ષિક સબસ્ક્રાઇબ કરી શકાશે.

संदीप भट्ट, गांधीनगर
मोबा. 9824174767

सेवानिवृत्ति पर अभिनंदन

सर्वप्रिय - मनोज राणा

निवृत्ति शब्द में यह अर्थ भी निहित है कि विषय विशेष से तटस्थता के साथ अन्यान्य से निकटता और इसी भावार्थ से मालवा मंडल के अनन्यतम सहयोगी तथा केन्द्रीय कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्य सर्व प्रिय, सर्व स्वीकार्य एवं पुष्कल व्यक्तित्व स्वजन श्री मनोज रमेशचंद्र राणा ''इंदौर'' की चार दशकीय यशोवान शासकीय सेवा पूर्णता: की वेला में प्रफुल्लित मन और पुलकित चित्त से शत् - शत् अभिनंदन।

श्री मनोज भाई की संपूर्ण शासकीय सेवा अवर्णनीय कर्तव्यनिष्ठता, अनुकरणीय ईमानदारी, अनुगामी परिश्रम, प्रेरणास्पद विशिष्ट ज्ञान, समृद्ध वृहद् अनुभव और अपरिमित स्नेह से ही निर्वाहित हुई है। इसी विशिष्ट प्रकृति और प्रवृत्ति की मूल्यवान फलश्रुति यह है कि आपको अपने सेवा काल के दौरान अपने विभाग से पंचदश आवृत्ति तक सम्मान की यक्ष निधि मिलती रही और आप कार्य संपादन की श्रेष्ठता के सोपान पर सदैव विराजित रहे। आपकी ससम्मान सेवा निवृत्ति में मालवा मंडल और केलवणी परिवार का यह स्वांत: सुखाय है कि अब आपका परिवार से शेष- अवशेष समय समाज के लोक मंगल हेतु ही लोकार्पित रहेगा। आपकी कार्यालय सहायक से अनुभाग अधिकारी तक की शासकीय सेवा आपके विभागीय पटल पर सदैव स्वर्णांकित रहेंगी। सेवा निवृत्ति की प्रभाति का शुभेच्छा राग में कोरस गान यही है कि आप स्वस्थ्य तन और प्रसन्न मन सहित आयुष्मान हो।

गोविंद पंड्या
कोषाध्यक्ष
श्री आम्यंतर औदुम्बर केलवणी मंडल, वडोदरा

श्री आभ्यंतर औदुम्बर केलवणी मंडल, वडोदरा एवं
मालवा अभ्यंतर ओदुम्बर मंडल तथा औदुम्बर कलश पूजा परिवार

शब्द संयोजन - राकेश राणा

सत्यकाम शास्त्री
उप प्रमुख
श्री आभ्यंतर औदुम्बर केलवणी मंडल, वडोदरा
एवं अध्यक्ष माँ आ.औ.ब्रा. मंडल, इंदौर

અભિનંદન પાઠવીએ

• હાલોલ ખાતે મહેશભાઈ શિવશંકરભાઈ જોષી ને લાયન્સ ક્લબના પ્રમુખ તરીકે દિલ્હી ખાતે અભિવાદન કરાયું તે બદલ અભિનંદન.....

• શામળાજી ખાતે એકાદશ દિવસીય શ્રી રામરક્ષા સ્ત્રોત સામુહિક અનુષ્ઠાન શ્રીરામ પ્રાણપ્રતિષ્ઠા નિમિતે સમસ્ત જ્ઞાતિને રાત્રી ૮ થી ૮.૩૦ કલાકના સમયે જોડીને રામરક્ષા સ્ત્રોત પાઠ કરાવ્યા તે કાર્ય બદલ નલીનભાઈ ભટ્ટને અભિનંદન.

• મહેમદાબાદ ખાતે આભ્યાન્તર ઔંદુમ્બર સેવા સમાજ ધ્વારા ગણેશાકાર ગણેશ દેવસ્થાન માં ગણેશજીના સાનિધ્યમાં ગણેશ મહાયાગમાં ૧૦૦૮ લાડુના યજ્ઞમાં યજ્ઞકાર્ય સમસ્ત ઔંદુમ્બર પરિવાર ની હાજરીમાં સંપૂણ કરાવ્યા બદલ આદરણીય પ્રકાશભાઈ પંડ્યાને ખુબ ખુબ અભિનંદન.

• શ્રી મનોજભાઈ રમેશચંદ્ર રણા ને ઇન્દોર ખાતે મધ્યપ્રદેશ પશ્ચિમ ક્ષેત્રે વિધુત મંડળ તરફથી ઉત્કુષ્ઠ કામગીરી કરવા બદલ MD શ્રી દ્વારા પ્રશસ્તીપત્ર એનાયત થયો ગણતંત્ર દિવસે તે બદલ શ્રી મનોજભાઈ ને ખુબ ખુબ અભિનંદન.

• મહારાષ્ટ્ર સ્ટેટ ઇન્ટર યુનિવર્સીટી રીસર્ચ કોન્વેન્શન નાશિક ધ્વાર આયોજિત કાર્યક્રમ માં શ્રી કલ્પિત રાજેન્દ્રકુમાર આચાર્ય ને વર્ષ ૨૦૨૩-૨૪ નો આવિષ્કાર એવોર્ડ યુવા અવસ્થાએ હેલ્થ સાયન્સમાં સંસોધન કરવા બદલ વાઈસ ચાન્સેલર દ્વારા એનાયત થયો તે બદલ હાર્દિક અભિનંદન

• ભાવિન હર્ષદભાઈ પંડ્યા ના સુપુત્ર ચિ.પર્વ ને રાજકોટ ખાતે વેઇટ લીફટીંગ માં ૨૫૦ કિ.ગ્રા માં ગોલ્ડ મેડલ પ્રાપ્ત કર્યા બદલ ખુબ ખુબ અભિનંદન.

• અમદાવાદ નિવાસી શ્રી નૈષધભાઈ અશોકભાઈ પુરાણી દ્વારા તા.૨૭/૦૧/૨૦૨૪ ના રોજ પુસ્તક લોકાર્પણ સમારોહ માં “મહેફિલ વિથ નૈષધ” લેખિત પુસ્તક નું રાજ્યના

પ્રસિદ્ધ સાહિત્યકારો ની ઉપસ્થિતિમાં પુસ્તક નું વિમોચન કરવા માં આવ્યું તે બદલ નૈષધભાઈ ને ખુબ ખુબ અભિનંદન.

• દાહોદ ખાતે અ.સૌ મેઘાવી કલ્પેશભાઈ રણા ને ગાંધીનગર ખાતે વિમેન્સ ડેવલોપમેન્ટઓફિસર્સ,સર્વ શિક્ષા અભિયાન,શિક્ષણ વિભાગ ગાંધીનગર ખાતે ક્લાસ વન અધિકારી શ્રી તરીકે બઢતી અને બદલી મળ્યા બદલ ખુબ ખુબ અભિનંદન.

• અમદાવાદ ખાતે મૂળ બાસવાડા નિવાસી પ્રણવ ચંદ્રકાંતભાઈ રણાના સુપુત્ર ચિ. હીતાંશના યજ્ઞોપવીત સંસ્કાર નિમિતે બટુકને ઇષ્ટ દેવ શ્રી દેવગદાધર શામળિયારાયના આશીર્વાદ થી બ્રહ્મ વિદ્યા પ્રાપ્ત થાય તે માટે કુર્યાત બટોર્ મંગલમ થાય એ માટે મંડળ દ્વારા શુભ મંગલકામના પાઠવીએ છીએ.

• બાલાસિનોર નિવાસી હાલ વડોદરા ખાતે શ્રી શુંભનેષકુમાર મહેશ્વર રણા નાં સુપુત્ર ચી.મોહિત ના શુભલગ્ન દાહોદ ખાતે સૌ.કા. પ્રતીક્ષા ના છાયાબેન ગોપાલકૃષ્ણ ઉપાધ્યાયની દીકરી સાથે થયા તે બદલ અભિનંદન.

• ગાંધીનગર ખાતે અનિલભાઈ જીતેન્દ્રરાય શ્રોત્રીય ના સુપુત્ર ચી.માલવ્ય ના શુભલગ્ન સૌ.કા. ધ્રુવી પ્રગ્નેશભાઈ સુધીરભાઈ ફળિયા ની દીકરી સાથે થયા તે બદલ અભિનંદન.

• ગાંધીનગર ગીફ્ટ સીટી ખાતે દુબઈની કોર્પોરેટ શેરસ્ટોક એક્શચેજ ના કાર્યાલય ખાતે કલોલ નીવાસી શ્રી રવિભાઈ દીપકભાઈ આચાર્ય ને ડે.મેનેજર તરીકે નિમણુક મળવા બદલ અભિનંદન.

• વડોદરા ખાતે હિમાંશુભાઈ ભાનુપ્રસાદ પંડ્યા ની સુપુત્રી ઉર્વી ના શુભલગ્ન ચી.સાગર યતીન નરેન્દ્રપ્રસાદ પંડ્યા સાથે થયા તે બદલ અભિનંદન.

• વડોદરા ખાતે જયેશભાઈ વિજયક્ષ્ણ રણા ની દીકરી ડો.સમીક્ષાના શુભલગ્ન ચી.શ્રીનાથ સાથે થયા તે બદલ અભિનંદન.

અમદાવાદ ખાતે શ્રી તન્મય હરીશકુમાર વ્યાસ અને રામ ભક્તો દ્વારા અભૂતપૂર્વ શ્રી રામ યજ્ઞ યોજાઈ ગયો જે વહેલી સવારે 7 વાગ્યાં થી શરુ કરીને સાંજે 7 વાગે પૂર્ણ થયો જેમાં હવન કુંડ ૯ ફૂટ પહોળો અને લાંબો હતો જ્યાં ખુબ મોટી માત્ર માં શાકલ્ય હોમવમાં આવેલ જેનો સમગ્ર જ્ઞાતિજનો એ લાભ લીધેલ

સમસ્ત બ્રહ્મ સમાજ, અમદાવાદ ખાતે યોજાયેલી મીટીંગ માં બ્રહ્મ એકેડેમી, બ્રહ્મ જોબ, બ્રહ્મ વિવાહ બાબતે સમગ્ર કાર્યક્રમો માં સફળતા મળે તે માટે વિવિધ જિલ્લાઓ ના પ્રમુખશ્રી ને સાથે કોર કમિટી ની રચના થઇ જેમાં શ્રી સંદીપભાઈ ભટ્ટ ગાંધીનગર ને અધ્યક્ષ બનાવવામાં આવ્યા છે.. અને હવે પછી સમગ્ર ગુજરાત ના તમામ જિલ્લા ઓ માં આ કાર્યક્રમો ને વધુ સફળતા મળે તે માટે કાર્યકારીણી નક્કી કરવામાં આવેલ છે

વાયબ્રન્ટ ગુજરાત 2024 અંતર્ગત ગાંધીનગર ખાતે યોજાયેલી આંતરરાષ્ટ્રીય ટ્રેડ ફેર માં ગુજરાત સરકાર દ્વારા જાહેરાત નું કામ સફળતાપૂર્વક શ્રી જયેન્દ્ર ભટ્ટ, ગુરુકૃપા એર એડ એજન્સી દ્વારા કરવામાં આવ્યું....

<u>નુતન ગ્રહ્પ્રવેશ</u>

- હિરેનકુમાર પુરુષોતમદાસ આચાર્ય B/૩૦૧, અમરદીપ હાઈટ્સ,મધુવન કલબ લાઈફ ની બાજુમાં સીગ્નસ વલ્ડ સ્કુલ પાસે,સમા હરણી લીંક રોડ,મુ.પો.વડોદરા,જી.વડોદરા.

- आदरणीय केशवजी-पदमाजी के सुपौत्र आदित्य मनीष भट्ट का एयरपोर्ट अर्थारिटी ऑफ इंडिया में जूनियन एग्जीक्यूटिव एटीसी पद पर सिलेक्शन लेकर ट्रेनिक के पश्चात जयपुर में पद स्थापन हुआ है एवं छोटे पुत्र अगम भट्ट ने मेडिकल क्षेत्र में ग्रेज्युएशन कर मुंबई में सर्विस ज्वाइन की है इस हेतु श्री आभ्यंतर केलवणी मंडल वडोदरा एवं मालवा मंडल इंदौर की ओर से हार्दिक अभिनंदन एवं स्वीर्णिम भविष्य की शुभकामनाएँ...

कुर्यात् बटुक मंगलम्

बटुक	सुपुत्र (सर्वश्री/श्रीमती)	स्थान
चि. हितांश	अ.सौ.वैशाली-प्रणव चंद्रकांत रणा	अहमदाबाद
चि. आरव	अ.सौ.खुशबू-विवेक राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री	अहमदाबाद
चि. राजवीर	अ.सौ.तनवी-मितेष आचार्य	मुंबई

दांमपत्य पथ नवयुगल को केलवणी मंडल एवं मा.आ.औ.ब्रा. मंडल की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

वर पक्ष (सर्वश्री एंव श्रीमती)	नवयुगल	वधु पक्ष (सर्वश्री एवं श्रीमती)
श्री गिरिश-कर्णिका रणा (इंदौर)	चि.हिमांशु संग अं.सौ. आयुषी	श्री नवीन-हेमलता अवस्थी (राजगढ़)
श्री डॉ.अशोक-रचना रणा (दाहोद)	चि. मृगल संग अं.सौ. नितिशा	श्री अनिल-शारदाबेन चतुर्वेदी (दाहोद)
श्री राजेश-रेखा भट्ट (जयपुर)	चि. प्रफुल्ल संग अं.सौ. शुभांगी	श्री अशोक-प्रिया जोशी (जयपुर)
श्री अनिल-भावना बेन (गांधीनगर)	चि. श्रीमालव्य संग अं. सौ. ध्रुवी	श्री प्रगनेश भाई फडिया (अहमदाबाद)
श्री यतिनभाई-कीर्तिदा पंडया (वडोदरा)	चि. सागर संग अं. सौ. उर्वी	श्री हिमांशु-वीणा बेन (वडोदरा)
श्री शैलेष-मनीषा जानी (वडोदरा)	चि. श्रीनाथ संग अं सौ डॉ. समीक्षा	श्री जयेश-जया रणा (वडोदरा)

વર્ષ ૨૦૨૨-૨૦૨૩ શૈક્ષણિક વર્ષ દરમ્યાન મંડળને મળેલ પુરસ્કાર ફોર્મ વિતરણ યાદી પત્રક

અનુ. નં	પુરસ્કાર રાશિ મેળવનારનું નામ	ગામ	રકમ	ચેક નં	BANK
૧	શ્રીમતી દિપાલી પ્રણવકુમાર પંડ્યા	વડોદરા	૪000/-	૫૯૫	B.O.B
૨	દિવ્યમ સ્વપ્નીલ આચાર્ય	અંકલેશ્વર	૪000/-	૫૯૬	B.O.B
૩	ભાવાંગી શિશિર આચાર્ય	અમદાવાદ	૪000/-	૫૯૭	B.O.B
૪	ઉન્નતિ પ્રદ્યુમન આચાર્ય	અમદાવાદ	૪000/-	૫૯૮	B.O.B
૫	તીર્થ અમિતકુમાર શાસ્ત્રી	વડોદરા	૪000/-	૫૯૯	B.O.B
૬	પુષ્ઠી અમિતકુમાર શાસ્ત્રી	વડોદરા	૪000/-	૬00	B.O.B
૭	નિયતિ કપિલ પંડ્યા	વડોદરા	૪000/-	૬0૧	B.O.B
૮	રવિશ હાર્દિક રણા	અમદાવાદ	૪000/-	૬0૨	B.O.B
૯	માહી સુમિત રણા	ખરગોન	૪000/-	૬0૩	B.O.B
૧૦	ધ્રુવ મિતેશકુમાર ભટ્ટ	દાહોદ	૪000/-	૬0૪	B.O.B
૧૧	કાવ્યા શ્રેયસ પંડ્યા	વડોદરા	૪000/-	૬0૫	B.O.B
૧૨	પુનીત જયેશ આચાર્ય	હાલોલ	૪000/-	૭૧૧	B.O.B
૧૩	પર્વ ભાવિનકુમાર પંડ્યા	અમદાવાદ	૪000/-	૭૧૨	B.O.B
૧૪	જીયા આશિષકુમાર આચાર્ય	અમદાવાદ	૪000/-	૭૧૩	B.O.B
૧૫	દેવર્ષ હિરેનકુમાર જોષી	અમદાવાદ	૪000/-	૭૧૪	B.O.B
૧૬	વિશા હિરેનકુમાર જોષી	અમદાવાદ	૪000/-	૭૧૫	B.O.B
૧૭	ઈશાબેન દેવેન્દ્રકુમાર ભટ્ટ	મોડાસા	૪000/-	૭૧૬	B.O.B
૧૮	જાહ્નવીરશેષકુમાર આચાર્ય	અમદાવાદ	૪000/-	૭૧૭	B.O.B
૧૯	શ્રધ્ધા બ્રિજેશકુમાર પંડ્યા	વાસદ	૪000/-	૭૧૮	B.O.B
૨૦	તેજસ્વી બ્રિજેશકુમાર પંડ્યા	વાસદ	૪000/-	૭૧૯	B.O.B
૨૧	પૂજન કેતનકુમાર વ્યાસ	ગોધરા	૪000/-	૭૨0	B.O.B
૨૨	સંકલ્પ તુષારકુમાર વ્યાસ	ગોધરા	૪000/-	૭૨૧	B.O.B
૨૩	સોહમ ભાવિનકુમાર પંડ્યા	અમદાવાદ	૪000/-	૭૨૨	B.O.B
૨૪	તન્વી રાજીવકુમાર આચાર્ય	અમદાવાદ	૪000/-	૭૨૩	B.O.B
૨૫	સૃષ્ટિ રાજીવકુમાર આચાર્ય	અમદાવાદ	૪000/-	૭૨૪	B.O.B
૨૬	દક્ષકુમાર જયદીપભાઈ આચાર્ય	મોડાસા	૪000/-	૭૨૫	B.O.B

૨૭	યુગ કવનકુમાર પંડ્યા	અમદાવાદ	૪000/-	૬0૬	B.O.B
૨૮	ખુશી આશિષકુમાર શાસ્ત્રી	દાહોદ	૪000/-	૬0૭	B.O.B
૨૯	આર્ય હેમંતકુમાર ભટ્ટ	વડોદરા	૪000/-	૬0૮	B.O.B
30	ખુશાલીબેન જયદીપભાઈ આચાર્ય	મોડાસા	૪000/-	૬0૯	B.O.B
3૧	જયમીન વિશ્વજીત આચાર્ય	ખરગોન	૪000/-	૬૧0	B.O.B
3૨	વિરાજ વિશ્વજીત આચાર્ય	ખરગોન	૪000/-	૭૨૬	B.O.B
33	હર્ષ આનંદ રણા	સુરેન્દ્રનગર	૪000/-	૬૧૧	B.O.B
3૪	આયુષી દિલીપકુમાર ભટ્ટ	કલોલ	૪000/-	૬૧૨	B.O.B
3૫	ઝરણા દક્ષેશભાઈ રણા	દાહોદ	૪000/-	૬૧3	B.O.B
3૬	જન્મેજ આશીષકુમાર રણા	દાહોદ	૪000/-	૬૧૪	B.O.B
3૭	દેવ રાહુલકુમાર પંડ્યા	વડોદરા	૪000/-	૭3૫	B.O.B
3૮	પ્રિશા ભાર્ગવકુમાર ભટ્ટ	કલોલ	૪000/-	૬૧૬	B.O.B
3૯	કશ્વી હાર્દિક પંડ્યા	બેંગ્લોર	૪000/-	૬૧૭	B.O.B
૪0	અદિતિ અશોક રણા	દાહોદ	૪000/-	૬૧૮	B.O.B
૪૧	પર્વ દિગંતકુમાર શાસ્ત્રી	દાહોદ	૪000/-	૬૧૯	B.O.B
૪૨	પાવન દિગંતકુમાર શાસ્ત્રી	દાહોદ	૪000/-	૭૨૭	B.O.B
૪3	મહિમન પુરવકુમાર પંડ્યા	અમદાવાદ	૪000/-	૭૨૮	B.O.B
૪૪	આસ્થા ગજેન્દ્રકુમાર રણા	બાંસવાડા	૪000/-	૭૨૯	B.O.B
૪૫	ધ્રુવી જાગૃતકુમાર રણા	દાહોદ	૪000/-	૭30	B.O.B
૪૬	ઋષીત કલ્પેશકુમાર રણા	દાહોદ	૪000/-	૭3૧	B.O.B
૪૭	ધ્વનિ કલ્પેશકુમાર રણા	દાહોદ	૪000/-	૭3૨	B.O.B
૪૮	નિષ્ઠા જયેશકુમાર રણા	હાલોલ	૪000/-	૨30301	BANK OF MAHARASTRA
૪૯	મિશ્રી મહેશકુમાર જોષી	હાલોલ	૪000/-	૭33	B.O.B
૫0	ધ્રુવિન દેવેન્દ્રકુમાર ભટ્ટ	મોડાસા	૪000/-	૭3૪	B.O.B
૫૧	અવી સમીરકુમાર આચાર્ય	અમદાવાદ	૪000/-	૭3૫	BOB
૫૨	મિમાંસા અખિલેશ શાસ્ત્રી	ઇન્દોર	૪000/-	૭3૬	BOB
૫3	શ્રીવત્સ અખિલેશ શાસ્ત્રી	ઇન્દોર	૪000/-	૭3૭	BOB

તા.૦૧.૦૪.૨૦૨૩ થી કેળવણી મંડળને મળેલ અનુદાનની યાદી.

અ.નં.	તારીખ	દાતાશ્રી નું નામ	મળેલ અનુદાનની રકમ	સ્થળ
૧	૨૨.૦૧.૨૦૨૪	દક્ષેશ અરવિંદભાઈ રણા	૫,૧૦૦=૦૦	દાહોદ
૨	૨૬.૧૧.૨૦૨૪	સુધીરભાઈ દિનકરરાય પંડ્યા	૩,૦૦૦=૦૦	ઝાલોદ
૩	૨૨.૧૧.૨૦૨૩	લક્ષ્મીશંકર સોમેશ્વર આચાર્ય	૫,૦૦૦=૦૦	મુંબઈ
૪	૨૬.૧૦.૨૦૨૩	ગોપાલભાઈ રસિકલાલ પંડ્યા	૧૧,૧૧૧=૦૦	વડોદરા
૫	૧૬.૧૦.૨૦૨૩	પ્રદિપકુમાર રાજેંદ્રપ્રસાદ ભટ્ટ	૧૫,૦૦૦=૦૦	જયપુર
૬	૦૨.૧૦.૨૦૨૩	ગૌરાંગભાઈ પ્રવિણભાઈ આચાર્ય	૧૫,૦૦૧=૦૦	વડોદરા
૭	૦૨.૧૦.૨૦૨૩	જયેશ વિજયકૃષ્ણ રણા	૨૧,૦૦૦=૦૦	વડોદરા
૮	૦૧.૧૦.૨૦૨૩	ગોવિંદભાઈ વલ્લભદાસ પુરાણી	૧,૦૦૦=૦૦	મુંબઈ
૯	૦૧.૧૦.૨૦૨૩	કુંજન જગદિશભાઈ આચાર્ય	૫૦૧=૦૦	અમદાવાદ
૧૦	૨૮.૦૮.૨૦૨૩	શૈલેંદ્રભાઈ નારણપ્રસાદ જોષી	૧,૦૦૦=૦૦	વડોદરા
૧૧	૨૮.૦૮.૨૦૨૩	હાર્દિક યોગેશભાઈ વ્યાસ	૫,૦૦૦=૦૦	વડોદરા
૧૨	૧૫.૦૮.૨૦૨૩	રાકેશભાઈ રવિશંકરજી ભટ્ટ	૧,૧૦૦=૦૦	જયપુર
૧૩	૦૮.૦૮.૨૦૨૩	પુરવ ગિરિશભાઈ પંડ્યા	૧,૫૦૦=૦૦	અમદાવાદ
૧૪	૧૧.૦૭.૨૦૨૩	આશિષ ચંદ્રકાંત આચાર્ય	૫,૦૦૦=૦૦	અમદાવાદ
૧૫	૦૨.૦૬.૨૦૨૩	અંકિત ગોવિંદભાઈ પુરાણી	૧,૦૦૧=૦૦	મુંબઈ
૧૬	૩૧.૦૫.૨૦૨૩	સુખદેવ વલ્લભદાસ પુરાણી	૫,૫૦૦=૦૦	મુંબઈ
૧૭	૦૫.૦૬.૨૦૨૩	કપિલ જયકૃષ્ણ શાસ્ત્રી	૧૧,૦૦૦=૦૦	દાહોદ
૧૮	૩૧.૦૫.૨૦૨૩	સમીર જગદિશભાઈ આચાર્ય	૫૦૦=૦૦	અમદાવાદ
૧૯	૩૧.૦૫.૨૦૨૩	આસુતોષ ગોવિંદભાઈ પુરાણી	૧,૦૦૦=૦૦	મુંબઈ
૨૦	૩૧.૦૫.૨૦૨૩	બંકિમ લક્ષ્મીશંકર વ્યાસ	૧૫,૦૦૦=૦૦	અમદાવાદ
૨૧	૩૧.૦૫.૨૦૨૩	-	૩૦,૦૦૦=૦૦	-
૨૨	૩૧.૦૫.૨૦૨૩	મનોજકુમાર આનંદશંકર રણા	૫૧,૦૦૦=૦૦	રાજકોટ
૨૩	૩૦.૧૦.૨૦૨૩	શૈલબાળાબેન પ્રફુલચંદ્ર જોષી	૨૫૦૦૦=૦૦	વડોદરા
૨૪	૦૩.૦૨.૨૦૨૪	પ્રણવકુમાર ચંદ્રકાંતભાઈ રણા	૫૦૦૪=૦૦	અમદાવાદ
૨૫	૫.૦૨.૨૦૨૦૪	કમલકુમાર પુષ્પદંત રણા	૧૧૦૦=૦૦	ખરગોન
૨૬	૦૫.૦૨.૨૦૨૪	સત્કામ સુરેશચંદ્ર શાસ્ત્રી	૧૧૦૦૦=૦૦	ઇન્દોર
૨૭	૦૧.૧૦.૨૦૨૩	રીટાબેન રોહિતકુમાર પંડ્યા બીરિન રોહિતકુમાર પંડ્યા	૨૫૦૦=૦૦	વડોદરા

मालवा मंडल को प्राप्त सहयोग राशि

राशि	निमित्त	द्वारा	शहर
2000 रु.	चि. आव्यांश के जन्मदिन के उपलक्ष में	श्री आयुष अविनाश शास्त्री	इंदौर
200 रु.	सहयोग राशि	श्री धर्मेश शास्त्री	इंदौर
400 रु.	सहयोग राशि	श्री संजय राणा	इंदौर
101 रु.	सहयोग राशि	श्रीमती सुरेखाबेन शास्त्री	इंदौर
500 रु.	सहयोग राशि	श्रीमती श्रीमती वंदना चौबे	इंदौर
500 रु.	सहयोग राशि	श्री अभिषेक प्रवीण आचार्य	इंदौर
1100 रु.	सुश्री मीमांसा के जन्मदिन के उपलक्ष में	श्री सत्यकाम शास्त्री	इंदौर
500 रु.	सहयोग राशि	पूर्व स्टूडेंट	इंदौर
1 लाख रु.	शैक्षणिक पारितोषिक हेतु एफडी	श्रीमती मधुकांता बेन राजीव जोशी	इंदौर
5000 रु.	शिक्षण फंड	श्री अनुराग एम रणा	इंदौर।
5100 रु.	स्व. श्री प्रकाशचंद्रजी रणा खरगोन की स्मृति में	श्री कमल, राकेशजी राणा	खरगोन
2100रु.	स्व. श्रीमती धनलक्ष्मी अरविंद भाई रणा की स्मृति में	श्री दक्षेष रणा	दाहोद

श्रद्धांजलि

जीवन को सुरूचिपूर्ण और आनंदमयी जीते हुए स्वयं के पुनीत कर्मों से कैसे गरिमामय बनाकर आहूत किया जाए किसी को यह सिद्ध कला सीखना हो वह स्व.श्रीमती अमिताबेन राकेश कुमार भट्ट (जयपुर) से प्रेरणा प्राप्त कर सकता है। वीरपुर (गुजरात) के संयुक्त परिवार में जन्मी पारिवारिक मूल्यों से सुसंस्कृत स्व.श्री नवीनचन्द्रजी आचार्य एवं श्रीमती कुसुमबेन की यशस्वी सुपुत्री एवं जयपुर राजघराने के राजगुरु स्व.श्री भट्टराजा रविशंकर एवं श्रीमती नयना बेन के प्रतिष्ठित मर्यादित घराने की

कुलवधू स्व.श्रीमती अमिता राकेश कुमार भट्ट ने न सिर्फ अपने को B.A.LLB की उच्च शिक्षा से विभूषित किया बल्कि अपने पुत्र देवांशु को इन्जिनियर एवं पुत्री को डा.दिशा अपने कुशल मार्गदर्शन में अभिषिक्त करवाया। परिवार की सारी जिम्मेदारी,रीतिरिवाजों,वार-त्यौहार कुलपरम्परा का संपूर्ण निर्वहन करने के साथ, इन्जिनीयर्स एसोसिएशन में पत्नियों की संस्था इनर मेगा* एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था जुनियर चैम्बर जेसी की राजस्थान की महिला शाखा की अध्यक्ष रहीं तथा इन माध्यमों से रंगारंग सांस्कृतिक उत्सवों के आनंद के साथ निर्धन, असहाय, बुजुर्ग एवं नारियों एवं बच्चों के अनवरत कार्यक्रमों की रुपरेखा बनाकर अपने अनथक परिश्रम से मूर्तरुप देना जीवनशैली का अभिन्न अंग बना लिया।एक बहुआयामी व्यक्तित्व जिसमें कभी पारम्परिक गुजराती बेटी, कभी मारवाड़ी बहू तो कभी मुम्बई की अत्याधुनिक महिला नज़र आती थी जीवन के सभी पहलुओं को सकारात्मक और आनंद -उल्लास से जिया। एक संस्कारवान, सुसंस्कृत बहू,एक सेवा भावी जीवन संगिनी, अत्याधुनिक तर्कशील महिला,भावुक मां, भाभी,बहन एवं अपने सभी रिश्तों का बखूबी निर्वहन करने स्व.श्रीमती अमिता भाभीसाब रिश्तों के इतिहास में एक अमिट हस्ताक्षर बन गई है जो की दिलों में जीवंत रहेंगी। इनके असामयिक स्वर्गवास से समाज की अपूर्णनीय क्षति हुई, ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व को परम प्रभु श्री जगदीश्वर अपनी शरणागति एवं अवलंबित परिजनों को इस आघात को सहने की शक्ति प्रदान करें। आपके श्रीचरणों में अश्रुपूरित नेत्रों से सादर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

परम पूज्य स्व.श्रीमती पुष्पाबेन राजेन्द्र प्रसादजी भट्ट (जयपुर)एक साहसी , वात्सल्यमयी, आतिथ्य वत्सला महिला थी ।सबके प्रति प्रेम और वात्सल्य उनका प्रकृति प्रदत्त गुण था वह जिसके प्रति जितना स्नेह रखती थी समयानुसार उसके अधिकार पूर्वक डपटना भी जानती थी और यह इतनी सहजता से होता था कि अति स्नेहपूर्ण लगता था कोई भी उनके घर जाकर कभी भी उनको विस्तृत नहीं कर सकता था आपका अनायास

महाप्रयाण सही अर्थों में हमारे समाज के लिये मातृत्व युग का अवसान है, क्योंकि जब भी उनसे किसी का मिलना होता था उसे मातृतुल्य ममत्व अनूभूति होती थी,अब जो अमिट स्मृति ही रह गयी है। आपका अवसान समाज की अपूरणीय क्षति है,अश्रुपूर्ण नेत्रों से सादर श्रद्धासुमन एवं अंतिम प्रणाम सौंप कर परमप्रभु श्री जगदीश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत मासी की आत्मा को शरणागति एवं अवलंबित परिजनों को शोकवहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्रीजी शरण

स्व. श्री जगदीशचंद्र आचार्य (अहमदाबाद)
स्व. श्री ब्रजेशचंद रणा (धबौरा)
स्व. श्रीमती अनिता भट्ट (जयपुर)
स्व. श्रीमती जिज्ञासा राजीव आचार्य (अहमदाबाद)
स्व. श्री देंवेन्द्रभाई भट्ट (सामरप्याली कच्छ)
स्व. श्री योगेशभाई व्यास (बड़ौदा)
स्व. श्रीमती पुष्पाबेनभट्ट (जयपुर)
स्व. श्रीमती राजेश्वरी मनोजभाई भट्ट (मोड़ासा)
स्व. श्री पुष्पवदन पंड्या (अमेरिका)
स्व. श्री हर्षदभाई पंड्या (झालोद)
स्व. श्री प्रकाशभाई रणा (खरगोन)
स्व. श्रीमती धनलक्ष्मीबेन रणा (दाहोद)

शांति शांति शांति शांतिः

श्री आभ्यांतर औदुम्बर केलवणी मंडल, वडोदरा एवं मां.आ.औ.ब्रा.मंडल, इन्दौर